समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

Postal R.No. UA/DO/16/2015-2017, RNI-NO.38653/80

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक-संरक्षक : युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 मार्च 2016

(वर्ष-28, अंक-17)

शांतिकुंज, हरिद्वार

वार्षिक चंदा ₹ 40/-

विदेश में ₹ 500/-

प्रति अंक ₹ 2/-

E-mail : news@awgp.in

news.shantikunj@gmail.com

2 सम्पादकीय

युग परिवर्तन के लिए समर्थ सत्ता के प्रामाणिक माध्यम बनें

3 गुरुदेव की अंतर्वेदना का क्रांतिकारी स्पर्श

3 शक्तिपीठ खत्तलवाड़ा का रजत जयंती वर्ष समारोह

4-5 ऐतिहासिक तीर्थ कन्याकुमारी में गायत्री अश्वमेध महायज्ञ सम्पन्न

7 प्रखर प्रयाज के आधार पर गायत्री यज्ञों की बढ़ रही है लोकप्रियता

8 युग वसंत ने जन-जन में किया नवचेतना का संचार

हृदय की उदारता के बिना बुद्धि और वैभव में सुख-शांति कहाँ?

धर्म-संस्कृति की पुकार

मनुष्य जीवन स्वार्थ के लिए नहीं, परमार्थ के लिए है। भगवान ने मनुष्य को इतनी सारी सुविधाएँ इसलिए नहीं दी हैं कि वह उनसे स्वयं मौज-मजा करे और अपनी काम-वासनाओं की आग को भड़काने और फिर उन्हें बुझाने के गोरखधंधे में लगा रहे। यदि मौज-मजा करने के लिए ही ईश्वर ने मनुष्य को इतनी सुविधाएँ दी होतीं और अन्य प्राणियों को अकारण इससे वंचित रखा होता तो निश्चय ही वह पक्षपाती ठहरता।

शास्त्रों में अपनी कमाई को आप ही खा जाने वाले को चोर माना गया है। अतः सौ हाथों से कमाने और हजार हाथों से दान करने की नीति पर चलने की प्रवृत्ति हर किसी को अपनानी चाहिए। जो मिला है, उसे बाँटकर खाना चाहिए। इस त्याग और उपकार की पुण्य-प्रक्रिया का नाम ही धर्म, संस्कृति एवं मानवता है।

यदि इस पुण्य प्रक्रिया को तोड़ दिया जाय, मनुष्य केवल अपने मतलब की ही बात सोचने लगे और उसी में लगे रहने की नीति अपनाने लगे, तो निश्चय ही मानवीय संस्कृति नष्ट हो जायेगी। शांति और समृद्धि की आधारशिला के रूप में जो परमार्थ मानवजाति की अंतरात्मा बना चला आ रहा है, उसे नष्ट-भ्रष्ट कर डालना, स्वार्थी बनकर जीना, निश्चय ही सबसे बड़ी मूर्खता है।

हृदयहीनता की विडंबना

ऐसा क्यों है कि एक मनुष्य के पास पर्याप्त साधन, सम्पत्ति, जीवन निर्वाह की वस्तुएँ हैं, फिर भी वह उद्विग्न, अशांत, परेशान-सा देखा जाता है। दूसरा उच्च शिक्षा सम्पन्न, अच्छे पद पर प्रतिष्ठित होकर भी भूला, भटका-सा दिखाई देता है। व्यापारी, विद्वान, नेता, पंडित, उच्च पद पर आसीन लोग इसी प्रश्न के समाधान के लिए परेशान मालूम पड़ते हैं। अधिकांश लोगों की एक ही शिकायत है- संघर्ष, अशांति, क्लेश, परेशानी। नीचे से लेकर ऊपर तक अधिकांश व्यक्ति इसी प्रश्न के पीछे

बुद्धि के बल पर व्यापार, शिक्षा, पांडित्य, विद्वत्ता, उच्च पद एवं जीवन की अन्य सभी तरह की सफलताएँ मिल जाती हैं, किन्तु हृदय की विशालता के अभाव में इन सफलताओं के बड़े-बड़े महल उसी तरह डरावने और अटपटे लगते हैं जैसे सुनसान, अंधेरे भवन और किले। ...

शांति और समृद्धि की आधारशिला के रूप में जो परमार्थ मानवजाति की अंतरात्मा बना चला आ रहा है, उसे नष्ट-भ्रष्ट कर डालना, स्वार्थी बनकर जीना, निश्चय ही सबसे बड़ी मूर्खता है।

परेशान हैं और तरह-तरह के प्रयत्न करते रहते हैं, फिर भी इसका समाधान नहीं होता।

वस्तुतः जीवन के इस प्रश्न का समाधान बाहरी सफलताओं या संसार में नहीं है। इसका समाधान मनुष्य के अपने अंदर है, वह है जीवन व्यवहार में हृदय को महत्त्व देना। हमारी बुद्धि बढ़ी है, किन्तु हमारा हृदय अभी तक जड़ ही बना हुआ है। बुद्धि के बल पर व्यापार, शिक्षा, पांडित्य, विद्वत्ता, उच्च पद एवं जीवन की अन्य सभी तरह की सफलताएँ मिल जाती हैं, किन्तु हृदय की व्यापकता, विशालता के अभाव में इन सफलताओं के बड़े-बड़े महल उसी तरह डरावने और अटपटे लगते हैं जैसे सुनसान, अंधेरे भवन और किले। हृदय की जीवन-शक्ति के अभाव में मनुष्य की समस्त समृद्धि, विद्वता, बड़प्पन, उच्च पद के भयावने भूत उसे खाने लगते हैं।

महापुरुषों का जीवन-पथ

एक समय महात्मा बुद्ध को भी इसी भूत का सामना करना पड़ा था। वे राजपुत्र थे, अतुल सम्पत्ति थी, सुंदर और भव्य भवन थे, मन बहलाने के बड़े-बड़े साधन थे और सभी कुछ था, किन्तु बुद्ध को ये सब अटपटे लगे। आत्म प्रसाद, शांति, आनन्द, समाधान बुद्ध को इस समृद्धि और राजमहलों में नहीं मिला। वे इन सब अलंकारों को छोड़कर नीचे उतरे, अपनी इन दीवारों को तोड़कर बुद्ध व्यापक बने, जन-मन के साथ एकता प्राप्त की और वे फिर राजमहल के राजकुमार न रहकर असीम के साथ, मानवता के साथ एकाकार हुए, तभी उन्हें जीवन के उस प्रश्न का समाधान मिला।

भगवान राम ने इसी पथ का वरण किया। समृद्ध, सुसम्पन्न अयोध्या नगरी को त्याग राम वल्कल वस्त्र धारण कर अनंत पथ के पथिक बने और जंगल में कृत्रिमता से दूर प्रकृति के फैले विशाल आँचल में पशु-पक्षी, वनस्पति, नदी, नाला, पहाड़ तक से अपने हृदय को जोड़ा। शबरी, गिद्ध, केवट के हृदय से हृदय जोड़ने वाले दशरथ-सुत राम जनमानस के राम बन गये।

महात्मा गाँधी ने उच्च शिक्षा का अभिमान छोड़ा, जनता-जनार्दन के समकक्ष उतरे, वैसा ही पहना, वैसा ही खाया। अपने जीवन को, अपनी विद्वत्ता को निजी समृद्धि का आधार न बनाकर पीड़ित मानवता के कल्याण, उन्नति, प्रगति का आधार बनाया।

इसी तरह स्वामी रामकृष्ण, विवेकानन्द, दयानंद, रामतीर्थ, लोकमान्य तिलक, मालवीय जी आदि ने अपनी समृद्धि, विद्वत्ता, पांडित्य, उच्च पद आदि से नीचे उतरकर मानवता के हृदय से अपना हृदय जोड़ा, मानवता के कष्ट-दुःख, अपने कष्ट-दुःख समझे, जनता-जनार्दन की पीड़ा अपनी पीड़ा समझी और उसके लिए अपने जीवन को लगाया, एक घोर लोकसंग्रही से भी अधिक श्रम किया, कष्ट झेले, परेशानी उठायी, पीड़ित, दुःखी, क्लांत मानवता के लिए, जनता-जनार्दन के लिए।

अहंकार की दीवार नष्ट हो

समृद्धि, रूप, पांडित्य, विद्वत्ता, पद आदि का अभिमान ही वह चाहरदिवारी है जो हमें जीवन के यथार्थ स्वरूप से दूर किये हुए है। अभिमान, अहंकार चाहे वह किसी भी गुण, रूप, वस्तु का क्यों न हो, मनुष्य को वास्तविक सुख और आत्म-प्रसाद से दूर रखता है। जिसका दिल और दिमाग इस दम्भ की घेराबंदी में जकड़ा हुआ है, वह कैसे संतुष्ट रह सकता है?

जब धनवान धन का, दानवृत्ति का अभिमान छोड़कर दरिद्रता के प्रति अपने हृदय को जोड़ लेगा, शिक्षाशास्त्री पंडित जब मानवता की पंक्ति में आकर बैठेंगे, उच्च पद सम्पन्न लोग जब जनता-जनार्दन की अर्चना में लगेंगे, तो उनका अहं भाव सहज ही तिरोहित हो जायेगा और उन्हें जीवन के महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का समाधान मिल सकेगा। जीवन का सच्चा सुख, आत्म-प्रसाद, आत्म शांति, संतोष, हृदय को मुक्त और असीम व्यापक बनाने से ही संभव है।

सबसे बड़ा संतोष धन

भर्तृहरि राजा थे। जब राजपाट छोड़कर वे संत बने और जीवन के उच्च प्रश्न का समाधन पाया, तब उन्होंने कहा था-''न राजा बड़ा है, न तपस्वी, न विद्वान, साधारण व्यक्ति भी यदि अपने जीवन और कार्यों से संतुष्ट है तो वही सबसे बड़ा है।''

स च भवति दरिद्रः, यस्य तृष्णा विशाला।
मनसि च परितुष्टे, कोऽर्थवान को दरिद्रः॥

''जिसकी तृष्णा अधिक है, वही दरिद्री है, जिसका चित्त संतुष्ट है, उसके सामने न कोई धनी है, न दरिद्र।''

मनुष्य अपने रूप, गुण, समृद्धि, कीर्ति आदि के बोझ को जिस क्षण हृदय से हटाकर मानवता के साथ पंक्ति में बैठ जायेगा, जब अपने हृदय को असीम मानवता के साथ जोड़ लेगा, तभी जीवन की समस्त समस्याओं का समाधान सहज ही हो जायेगा।

वाङ् मय खंड-64 (राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने?), पृष्ठ-4.35 से संकलित, सम्पादित अंश

विद्वत्ता के आदर्श, विचार क्रांति के अग्रदूत आचार्य कुमारजीव

ऋषितुल्य आचार्य बंधुदत्त अपने आश्रम के दीक्षांत समारोह में जनसमूह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा, ''इन दिनों व्यक्ति और समाज अनेक प्रकार की कठिनाइयों, समस्याओं, चिंताओं और आशंकाओं से ग्रस्त है। सामान्यजन रुग्णता, अशिक्षा, दरिद्रता आदि के कुचक्र में पिस रहा है, पर विशिष्ट कहे जाने वालों को क्या उलझनें और विपत्तियाँ कम हैरान कर रही हैं? साधन-सुविधाओं के बीच यह अभावग्रस्तता कहाँ से टपक पड़ी?''

वे कुछ रुके और फिर कहने लगे, ''उसका एक ही कारण है बुद्धिवाद के मेघों से हो रही अनेकानेक कुचक्रों की मूसलाधार बारिश। अज्ञान का धुंधलका और कुचक्रों की झड़ी के कारण उपजा कष्टदायक भटकाव हर किसी को पथ भूले बंजारे की तरह संत्रस्त किये है। सारी विडंबनाओं का कारण है बुद्धि विभ्रम अथवा आस्था संकट और इसका एक ही समाधान है सद्विचार।''

विद्यार्थी आचार्य को प्रणाम कर प्रस्थान करने लगे। आचार्य ने तेजस्वी शिष्य कुमारजीव को रोकते हुए कहा, ''वत्स! तुम्हारी उच्च स्तरीय प्रतिभा के अनुरूप तुम पर विशेष जिम्मेदारी है। तुम कठिनाइयों, अभावों, असुविधाओं में रहे हो। संभव है तुम्हारे मन में आये कि प्रतिभा और अर्जित ज्ञान से सुविधा बटोरी और सम्पन्नता कमाई जाये। उस समय समूची मानवजाति को देखना। तुम्हारे अपने दुःख पहाड़ के सामने राई जैसे नगण्य लगेंगे। ध्यान रखना, सुविधा, सम्पन्नता की परिस्थितियाँ सुकुमार और विलासी बनाती हैं। प्रमाद और आलस्य उसके मानसिक मित्र बन जाते हैं और वह किसी योग्य नहीं रहता। तुम्हारी योग्यता बनी रहे, विकसित हो, फले-फूले इसलिए उसे सर्वहित में लगाना।''

कुमारजीव ने विनम्रतापूर्वक जीवन का हर क्षण मानवजाति के लिए जीने का आचार्य को वचन दिया और आचार्य से विचार क्रांति के अग्रदूत बनने का अशीर्वाद लेकर प्रस्थान किया।

कुमारजीव ने अपना वचन आजीवन निभाया। वे भारत की सीमाएँ लाँघकर चीन पहुँचे, चीनी भाषा सीखी, भारत के विचारपूर्ण साहित्य का चीनी में अनुवाद किया। लगभग सौ ग्रंथों के अनुवाद के साथ ताओ धर्म के आलोक में भगवान बुद्ध की शिक्षाओं के प्रसार हेतु मौलिक गंथ रचे।

जीवन में प्रलोभन कम नहीं मिले, लेकिन वे कहते रहे, ''मेरे लिए विद्या का अर्थ इंसान को उसके जीवन की कुशलता का बोध कराना है। यही जिम्मेदारी गुरुदेव ने मेरे कंधों पर डाली है, इससे में रंचमात्र नहीं हट सकता।''

युग परिवर्तन के लिए समर्थ सत्ता के प्रामाणिक माध्यम बनें

वे हमें श्रेष्ठ पदोन्नति देना चाहते हैं, उसे नकारें नहीं, निष्ठापूर्वक स्वीकार करें

साधना करें माध्यम बनने की

युग परिवर्तन करने की सामर्थ्य तो भगवान में ही है, वे ही उसे पूरा करेंगे। लेकिन वे अपने भक्तों और सहयोगियों को माध्यम बनाकर ही अपना कार्य करते रहे हैं। इसका अर्थ यह नहीं होता कि माध्यम बनने वालों को कुछ नहीं करना पड़ता और कोई भी उस श्रेय को पा सकता है। माध्यम बनने वालों को प्रभु की शक्ति का संवाहक बनना पड़ता है। इसके योग्य पात्रता तो अर्जित करनी ही पड़ती है।

कारखानों की मशीनें बिजली से चलाई जाती हैं। बिजली को उत्पादन केन्द्र से कल-कारखानों तक पहुँचाने के लिए एक पूरा तंत्र तैयार करना पड़ता है। इस तंत्र में तार (कंडक्टर), कुचालक (इन्सुलेटर), ट्रांस्फॉर्मर, स्विच आदि की जरूरत पड़ती है। उन सभी को अपने-अपने स्तर पर समर्थ और प्रामाणिक सिद्ध होना पड़ता है। उन्हें सर्किट (तंत्र) में फिट करने वाले इंजीनियर प्रत्येक घटक को चुन और परख कर ही प्रयुक्त करते हैं। यदि ऐसा न करें तो जिस शक्ति का प्रवाह उनके माध्यम से होना है, वे उसे सहन नहीं कर पायेंगे और तंत्र असफल या अपूर्ण सिद्ध हो जायेगा। यदि पूरी शृंखला में एक कड़ी भी कमजोर पड़ जाये तो पूरी शृंखला ही निष्प्रभावी हो जाती है। इसलिए शक्ति-प्रवाह के माध्यम गढ़ने या चुनने में पूरी सावधानी बरतनी पड़ती है।

इतिहास इस तथ्य का साक्षी रहा है। यह सच है कि त्रेता का लंका युद्ध हो या द्वापर में महाभारत का संग्राम, उसे रीछ-वानरों या पाण्डवों के पुरुषार्थ भर से जीता नहीं जा सकता था। लेकिन इसके साथ यह भी सत्य है कि यदि रीछ-वानर और पाण्डव पूरी निष्ठा के साथ जी-तोड़ पुरुषार्थ नहीं करते तो वे युद्ध जीतने के माध्यम-श्रेयाधिकारी नहीं बन सकते थे। युग निर्माण के क्रम में भी ऐसा ही है। परखे हुए पुरुषार्थियों को तैयार करके, चुन करके उन्हें ईश्वरीय तंत्र का प्रामाणिक अंग-अवयव बनाया जाना है। ऋषितंत्र उसी प्रक्रिया को पूरा करने में लगा है। युग साधकों में से जो जिस स्तर की प्रामाणिकता सिद्ध कर पा रहे हैं, उन्हें उसी स्तर का माध्यम बनाने की व्यवस्था बनायी जा रही है।

प्रज्ञा पुराण प्रथम खण्ड के नारद-विष्णु संवाद में इस तथ्य को अपने ढंग से व्यक्त किया गया है। भगवान विष्णु ने कहा है कि हे नारद! मैं निराकार रहकर प्रेरणा और शक्ति प्रवाहित करूँगा, तुम लोग माध्यम बनकर युग सृजन के कार्य को गतिशील और प्रभावी बनाना। इस प्रकार हम मिल-जुलकर यह कार्य पूरा करेंगे।

परमात्म शक्ति का भण्डार तो अनन्त और अक्षय है। युग परिवर्तन के हर कार्य के लिए उपयुक्त स्तर की समुचित ऊर्जा वहाँ से पहुँचाई जा सकती है। ऊर्जा प्रवाह को सही ढंग से प्रवाहित करने वाले माध्यम-नैष्ठिक व्यक्तित्व जिस स्तर पर विकसित और उपलब्ध होते जायेंगे, उसी अनुपात में कार्य में गतिशीलता और प्रभावोत्पादकता उभरती चली जायेगी। स्पष्ट है कि बड़ी संख्या में नैष्ठिकों को प्रामाणिक माध्यम बनने की साधना करने और कराने में प्रवृत्त होना जरूरी हो गया है।

जैसा कार्य, वैसे माध्यम

युगऋषि ने यह तथ्य अपने कथन और लेखन में जगह-जगह स्पष्ट किया है कि कार्य के अनुरूप माध्यम चुनने या विकसित करने पड़ते हैं। झोंपड़ी या कच्चा-सा घर बनाना हो तो कम साधनों और सामान्य सहयोगियों से ही काम सध जाता है। लेकिन जब बहुमंजिली इमारतें, पुल या बाँध आदि बनाने हों तो विशेष साधनों और विशेष कौशल सम्पन्न सहयोगियों, इंजीनियरों की जरूरत पड़ जाती है। यदि हाथ सेकना या पानी गरम करना हो तो सामान्य आग से ही काम चल जाता है, लेकिन धातु पिघलानी हो, बॉयलर चलाना हो तो उसके लिए अधिक ताप देने वाली अग्नि की जरूरत होती है। अपना जीवन निर्वाह करना हो तो सामान्य प्राण ऊर्जा से भी काम चल जाता है, किन्तु लोककल्याण के लिए, वातावरण बदलने के लिए विशेष प्राण ऊर्जा सम्पन्नों से कम में काम नहीं चलता। इसी तथ्य को युगऋषि ने क्रांतिधर्मी साहित्य में कुछ इस प्रकार व्यक्त किया है-

''यह कार्य (ईश्वर के साथ नवसृजन में सार्थक भागीदारी) ऐसा कार्य नहीं है, जिसे कोई भी कर ले। यह ऐसा बिल्ला (मैडल) नहीं है, जिसे किसी के भी गले में डाल दिया जाय। यह श्रेय उन्हीं को मिलता है जो कड़ी मेहनत, कठोर तप साधना द्वारा स्पर्धा जीतने की परीक्षा में सफल होते हैं।''

स्पष्ट है कि हमने अच्छे प्रचार माध्यम बनकर दिखा दिया। तमाम विरोधों के बीच गायत्री साधना, यज्ञ एवं संस्कारों की परम्परा को जनसुलभ बना दिया। युगऋषि को इससे बहुत प्रसन्नता हुई। अब उन्होंने सृजन तंत्र विकसित करने की कार्ययोजना दे दी है। प्रेरणा भी उनकी है, शक्ति प्रवाह भी वे ही देते हैं, किन्तु माध्यम बनने का संकल्प और साहस तो हमें ही दिखाना होगा।

क्रान्तिकारी सुदर्शन

अब हमें क्रान्तिकारी सु-दर्शन, श्रेष्ठ दर्शन को जीवन में अपनाना होगा। पू. गुरुदेव ने समग्र क्रान्ति के लिए 1. विचार क्रान्ति, 2. नैतिक क्रान्ति और 3. सामाजिक क्रान्ति की बात कही है। लेकिन उन्होंने जब देखा कि अधिकांश जन विचारों को रटकर, वाणी से दुहरा कर ही यह मान लेते हैं कि विचार क्रान्ति का उद्देश्य पूरा हो जायेगा, तो उन्होंने विचार के साथ जीवन दर्शन को महत्त्व देने की बात कही-

''मेरे लेखों और कथन में मेरी इच्छाओं, मेरी नियत को खोजो, उनका अनुकरण करो।'' कभी चर्चा के दौरान वे कहते थे कि *''मेरे जीवन दर्शन को समझो।''* हीन दर्शन, कुदर्शन से हीन विचार ही पनपते हैं। सुदर्शन से सुविचार और सुकर्म बढ़ते हैं। यही बात उन्होंने अपनी जीवनी 'हमारी वसीयत और विरासत' में भी समझायी है। कहा है-*''जो व्यक्ति हमारा जीवन दर्शन समझ लेगा, वह फिर अध्यात्म पथ से भटकेगा नहीं।''* हमारी युग निर्माण योजना में उनके एक लेख का शीर्षक है-**'हमारा अध्यात्मवादी जीवन दर्शन'**। यह जीवन दर्शन जन-जन में फैले, अपनाया जाये, तो भगवान विष्णु का **'सुदर्शन चक्र'** सक्रिय हो जाये। सुदर्शन चक्र चल पड़े तो आसुरी कुचक्र टूटते हैं और सज्जनता को पोषण मिलता है।

मनीषी बनें : युगऋषि ने अपने सृजन सैनिकों से मनीषी बनने का आग्रह किया है। मन+ईशी अर्थात् मन पर शासन करने वाला, मन को लगाम लगाकर सही दिशा में चलाने में सक्षम व्यक्ति। विचारक तो दर्शन की व्याख्या भर करते रहते हैं, मनीषी दर्शन को जीकर दिखाते हैं। आज की दुनियाँ उपदेशकों को सुन-सुनकर ऊब गयी है। उसे जीवन में दर्शन को साकार करने वाले साधक-मनीषी चाहिए। ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के उद्घाटन के क्रम में उन्होंने एक लेख लिखा था- **'युग मनीषा का आह्वान'**। 'मनीषा' अर्थात् वह दिव्य चेतन प्रवाह, जिसे धारण करके व्यक्ति मनीषी बन सकता है। मनीषा का दिव्य प्रवाह उन्होंने सूक्ष्म जगत में जाग्रत् कर दिया है, हमें उसे अपनाना है। यदि नैष्ठिक परिजन उनके जीवन दर्शन-क्रान्तिकारी सुदर्शन चक्र को क्रमशः अपनाने के संकल्प करें तो उनमें मनीषी के गुण विकसित होना कठिन नहीं है। उन्होंने गुरु के नाते मार्ग बना दिया है, हमें शिष्य के नाते उस पर चलकर दिखाना है, व्यावहारिक बनाना है।

अवतार बनने की छूट

सूक्ष्मीकरण साधना के बाद पू. गुरुदेव ने परिजनों से यह अपील की थी कि उन्होंने सूक्ष्म जगत में नवसृजन के लिए विशेष ऊर्जा चक्र की जो व्यवस्था बना दी है, उसका समुचित लाभ उठाने की तैयारी करें। जैसे इण्टरनेट की व्यवस्था बन जाने पर जो व्यक्ति अपने कम्प्यूटर को उससे जोड़ते हैं, उन्हें इच्छित-दुर्लभ जानकारियाँ मिल जाती हैं, वैसे ही उनके द्वारा स्थापित सूक्ष्मीकृत तंत्र से अपने मानस को जोड़ने वालों को विशिष्ट-दुर्लभ मनीषा का लाभ मिल सकता है। इस संदर्भ में उन्होंने कहा था कि *''मैं तुम सबको एक अंश का प्रज्ञावतार बनने की छूट देता हूँ।''*

युगऋषि हमेशा यह समझाते रहे हैं कि अवतार चेतना विशिष्ट व्यक्तियों के माध्यम से कार्य करती है, लेकिन वह वास्तव में एक दिव्य संचार, दिव्य आवेश के रूप में आती है। एक ही समय में अनेक व्यक्ति उसे थोड़े-बहुत अंशों में अवतरित करने के माध्यम बन सकते हैं। त्रेता युग में परशुराम जी और श्रीराम जी दोनों ने ही अवतारी भूमिका का सफल निर्वाह किया। प्रज्ञावतार के क्रम में उन्होंने एक व्यापक व्यवस्था बना दी है, उसका लाभ उठाने की छूट हमें दे दी है। अब यह हमारे ऊपर निर्भर है कि हम उसका समुचित लाभ-श्रेय पाने की पात्रता विकसित करने की साधना विकसित करते हैं या नहीं?

विशिष्ट साधना के सहज सूत्र

अवतारी चेतना के साथ जुड़ने की विशिष्ट साधना के सहज सूत्र उन्होंने उपलब्ध करा दिये हैं। युग निर्माण सत्संकल्प के सातवें सूत्र को अपनाकर हम उनका समुचित लाभ उठा सकते हैं, वह है- **''समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।''**

इस सूत्र को रट लेने भर से काम नहीं चलेगा। नवसृजन के संदर्भ में उनके दर्शन की गहराई समझते हुए अपनी पात्रता बढ़ाने के लिए उनका व्यावहारिक अभ्यास करना होगा। समय-समय पर गुरुवर द्वारा दिए गये संकेतों के आधार पर उनको स्पष्ट करने का छोटा-सा प्रयास यहाँ किया जा रहा है।

समझदारी : इतनी विकसित हो कि हम ईश्वर के साथ साझेदारी के लिए ब्राह्मण जीवन का महत्त्व समझ सकें। गुरुवर ने उसे किस रूप में अपनाया और समझाया, उसे ठीक से समझ और अपना सकें। उनके अनुसार सादा जीवन से उसकी शुरुआत भर होती है। वह भाव जब विकसित होता है तो भगवान की दी हुई प्रतिभा, विभूतियों और संसाधनों का कम से कम उपयोग अपने लिए करके शेष को प्रभुकार्य में होम देने की दीवानगी का रूप ले लेता है। इस साधना से जब उपलब्धियों का अधिक से अधिक अंश प्रभुकार्य में लगने लगता है, तो प्रकृति द्वारा विशिष्ट अनुदानों का प्रवाह अपने आप चालू हो जाता है। गुरुदेव कहते रहे हैं कि *''मेरे ऊपर श्रद्धाभरे जन सहयोग और समर्थ दैवी अनुग्रह की जो वर्षा होती रही है, उसका श्रेय हमारे ब्राह्मण जीवन को ही जाता है।''*

इस संदर्भ में यह भी कहते रहे हैं कि *''ब्राह्मणत्व जीवन में दिखे इससे अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि वह हमारी नियत की गहराई में स्थित हो।''* अनेक साधुवेशधारी सादगी से जीते दिखते हैं, किन्तु उनकी नियत में वैभव अर्जित करने की वृत्ति बनी रहती है। वह वृत्ति उनसे कुछ का कुछ करा लेती है। समझदारी इसी में है कि ब्राह्मणत्व हमारी नीयत में भी आ जाये।

ईमानदारी : लक्ष्य के प्रति अडिग भाव। सत्य पर दृष्टि बराबर बनी रहे और उसी के अनुसार अपने क्रिया कलापों को चलाते रहा जा सके। सफलता-असफलता दोनों से सीखते हुए सत्य पथ का अन्वेषण और उसके अनुगमन का क्रम सतत चलता रहे। हमारा लक्ष्य है युग निर्माण। उसका आधार है व्यक्ति निर्माण और परिवार निर्माण। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ईमानदारी के साथ निरन्तर प्रयास चलते रहें। समय की माँग को समझते हुए परिस्थितियों के अनुरूप उसमें पैनापन आता रहे।

जिम्मेदारी : नवसृजन के अनेक मोर्चे खुले हुए हैं और अनेक प्रकार की गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं। उनमें से किसी क्षेत्र विशेष में किसी विशेष गतिविधि को सँभालने और निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचाने की जिम्मेदारी निभाने की हिम्मत की जाय। उसके लिए अपने आप को तैयार करने से लेकर उचित गतिविधियाँ अपनाने की कुशलता को बढ़ाना भी जिम्मेदारी का ही अंग माना जाय।

बहादुरी : इसे उक्त तीनों साधनाओं को चलाने में जो रुकावटें अन्दर से या बाहर से आती हैं, उनसे निपटने के लिए जूझ जाने की प्रवृत्ति एवं क्षमता कह सकते हैं। आदर्शों के निर्वाह के लिए बलिदान हो जाने, कुर्बान हो जाने की प्रचण्ड ऊर्जा के रूप में इसका परिचय मिलता है।

युगऋषि ने यह बात बार-बार समझाई है कि अब हँसते-हँसते गोली खाने या फाँसी पर झूल जाने वाली बहादुरी की जरूरत नहीं है। अब तो अपने भौतिक सुखों और सुविधाओं से चिपके रहने वाली संकीर्ण प्रवृत्ति की कुर्बानी भर देने की जरूरत है। संकीर्ण स्वार्थ टूटने के भय और उन्हें पूरा करने के लोभ या मोह मरने देने या मार देने की बहादुरी भर पर्याप्त है। उक्त चारों साधनाओं का स्तर बढ़ने से व्यक्ति की पात्रता बढ़ती रह सकती है और साधकों को अवतारी चेतना के प्रामाणिक माध्यम बनने का श्रेय-सौभाग्य मिल सकता है।

वे देंगे, हम पायें

पूज्य गुरुदेव ने सभी परिजनों को सृजन साधना में पदोन्नति देने की तैयारी कर रखी है। वे श्रेय देना चाहते हैं, हम भी पाना चाहते हैं। वे हमें अपना अंग-अवयव बनाना चाहते हैं, अपनी दिव्य चेतना का एक अंश, उसकी एक कला हमारे अन्दर प्रवाहित करना चाहते हैं, हम उसे अपना लें। पात्रता अर्जित करने की साधना में संकल्पपूर्वक लग जायें। मार्गदर्शन वे दे रहे हैं, हम चलेंगे तो शक्ति भी वे देते रहेंगे।

भावनात्मक रूप से इस अभियान से जुड़े व्यक्तियों को खोजें। उनसे सम्पर्क बढ़ायें। उसके लिए समय निकालें, आत्मीयता विकसित करें। ज्योति से ज्योति जलाने, व्यक्तित्व के सम्पर्क से व्यक्तित्व गढ़ने-सँवारने की साधना में लग जायें। युगऋषि भावनाशील परिजनों की भीड़ में से कुछ ऐसे सृजन साधक, सृजनकर्त्ता चुनना और तैयार करना चाहते हैं जो सृजन की नयी हवा चला दें। लोग सृजेता बनने मे रुचि लेने लगें, उमंग अनुभव करने लगें। सृजन सैनिकों के उत्पादन का ऐसा प्रभावी क्रम चल पड़े कि किसी भी मोर्चे पर उनकी कमी न पड़ने पाये। आइये ऐसा ही करें कि वे प्रसन्न हों और हम धन्य हो जायें।

किसी समाज, देश या व्यक्ति का गौरव अन्याय के विरुद्ध लड़ने में ही परखा जा सकता है।

आदरणीय डॉ. साहब द्वारा प्रथम प्राण प्रतिष्ठित शक्तिपीठ का रजत जयंती वर्ष

गायत्री के ज्ञान प्रकाश का व्यापक विस्तार करने की प्रेरणा और योजनाएँ

वटवृक्ष बना गायत्री चेतना का बीज

गायत्री शक्तिपीठ खत्तलवाड़ा में आदरणीय डॉ. साहब द्वारा की गयी प्राण प्रतिष्ठा उनके द्वारा किसी भी शक्तिपीठ पर की गयी पहली प्राण प्रतिष्ठा थी। 24 वर्ष पूर्व उनके द्वारा आरोपित गायत्री चेतना का बीज आज वटवृक्ष का आकार ले चुका है।

देसविवि. की छात्राओं ने दिखाया कौशल

सूरत में इंटर्नशिप पर गयीं देव संस्कृति विश्वविद्यालय की छात्रा रिया शर्मा, प्रिया तिवारी और दिशा ठाकुर ने भी अपनी प्रेरणाप्रद अभिव्यक्तियों से देव संस्कृति विश्वविद्यालय की उत्कृष्ट शिक्षा शैली का परिचय दिया।

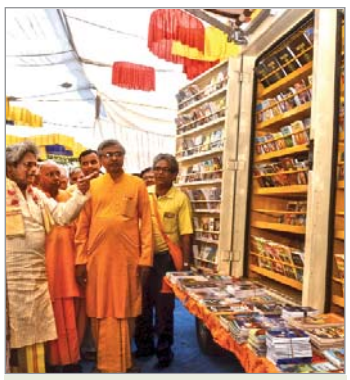

चेतना केन्द्र, सूरत के ज्ञानरथ का अवलोकन

चेतना केन्द्र, सूरत की ज्ञानरथ सेवा

गायत्री चेतना केन्द्र, सूरत वलसाड़ जिले के गाँव-गाँव में अपना ज्ञानरथ भेजेगा। इसमें वीडियो प्रदर्शन आदि की सुविधा भी है। आदरणीय डॉ. साहब ने इस ज्ञानरथ का अवलोकन किया।

खत्तलवाड़ा, वलसाड़ (गुजरात)

गुजरात के सबसे दक्षिणी छोर पर स्थित उमरगाम तालुका में गायत्री शक्तिपीठ खत्तलवाड़ा इस वर्ष अपना रजत जयंती वर्ष मना रहा है। 6 से 8 फरवरी की तारीखों में आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की मुख्य उपस्थिति में आयोजित 25वें प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के साथ इसका शुभारंभ हुआ। उल्लेखनीय है कि 2 फरवरी 1992 को इस शक्तिपीठ की प्राण प्रतिष्ठा आदरणीय डॉ. साहब द्वारा की सम्पन्न करायी गयी थी।

आदरणीय डॉ. साहब 8 फरवरी को खत्तलवाड़ा पहुँचे। उन्होंने गायत्री माता का आह्वान-पूजन किया। तत्पश्चात पूरे गुजरात के कार्यकर्त्ताओं की गोष्ठी को संबोधित किया। उन्होंने शक्तिपीठ की गतिविधियों और उपलब्धियों की सराहना करते हुए कहा कि यह शक्तिपीठ न केवल खत्तलवाड़ा, अपितु पूरे दक्षिण गुजरात में गायत्री ज्ञान का प्रकाश फैलायेगा। इसे स्वावलम्बन के एक आदर्श केन्द्र के रूप में विकसित किया जाना चाहिए।

खत्तलवाड़ा के रजत जयंती महोत्सव में पूरे गुजरात के प्रमुख कार्यकर्त्ता शामिल हुए। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के वहाँ पहुँचने पर परम्परागत रूप से और विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ भव्य स्वागत किया गया। स्थानीय स्वामीनारायण सम्प्रदाय ने भी शांतिकुंज प्रतिनिधि का भावभरा अभिनंदन किया। इस अवसर पर कार्यक्रम के आयोजन में प्रमुख योगदान देने वाले खत्तलवाड़ा के श्री अरविंद भाई एवं श्री जयेश भाई, राजकोट की श्री पिनाकिन राज्यगुरु, मोडासा के श्री किरीट सोनी, वापी के श्री हितुभाई पटेल ने सबको अपनी कार्ययोजना और प्रगति से अवगत कराया।

सायंकाल युवा सम्मेलन एवं दीपयज्ञ का आयोजन हुआ। आदरणीय डॉ. साहब ने इसे संबोधित करते हुए युवा क्रांति वर्ष की कार्ययोजना बतायी। उन्होंने कहा कि युवाओं के चिंतन-चरित्र में बदलाव लाना युग निर्माण आन्दोलन का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है। युवा बदल जायेंगे तो समाज और देश बदल जायेगा।

युवा क्रांति के लिए प्रचण्ड आत्मबल की आवश्यकता है और यह आत्मबल समर्पण से प्राप्त होता है। गुरुदेव ने दादा गुरुदेव के प्रति समर्पण किया। मेडिकल की पढ़ाई और यूएस जाने के आकर्षण को छोड़कर गुरुदेव के प्रति समर्पण से ही हमें वह शक्ति मिली, जिसके द्वारा हम दिन-रात समाज की सेवा कर सकते हैं। सद्गुरु के प्रति, श्रेष्ठता और आदर्श के प्रति आपका समर्पण भाव ही क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन का आधार बनेगा।

आदरणीय डॉ. साहब शक्तिपीठ पर एक्यूप्रेशर वॉक वे का लोकार्पण करते हुए

गायत्री शक्तिपीठ खत्तलवाड़ा के तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव में 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ, 1024 सत्यनारायण व्रत कथा, युवा सम्मेलन एवं ज्ञानक्रांति दीपयज्ञ का आयोजन किया गया था। इनका संचालन शांतिकुंज से पहुँची सर्वश्री सदानंद आंबेकर, सूरज प्रसाद शुक्ला, जयराम मोटलानी, हरि प्रसाद चौधरी, मयाचंद भारद्वाज, रुद्र गिरि, संतोष सिंह, खिलावन सिन्हा की टोली ने किया।

आदरणीय डॉ. साहब ने शक्तिपीठ खत्तलवाड़ा पर माँ भगवती हॉल, एक्यूप्रेशर वॉक वे, नवग्रह वाटिका का लोकार्पण किया। कार्यक्रम के निमित्त विशेष चित्र प्रदर्शनी और साहित्य विक्रय केन्द्र भी लगाये गये थे।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी गायत्री शक्तिपीठ पर आयोजित युवा सम्मेलन को संबोधित करते हुए

युवा क्रांति का एक अनुकरणीय आदर्श

विचार क्रांति का एक सफल, साहसी प्रयोग

गुरुदेव की अंतर्वेदना का क्रांतिकारी स्पर्श

2011 में एक पुस्तक पढ़ी 'युगऋषि की अंतर्वेदना'। उसे पढ़कर मन में बार-बार यही चिंतन उभरता था कि गुरुदेव हमसे कितना प्यार करते हैं, लोगों का जीवन बदलने के लिए कितना कठिन तप किया है उन्होंने! क्या हम लोगों का जीवन बदलकर उनकी अंतर्वेदना को बँटा नहीं सकते?

उसी दिन से युग साहित्य का झोला कंधे पर टाँग लिया। तब से अब तक हर दिन उसे लेकर रेलवे स्टेशनों पर, मंदिरों में, सार्वजनिक स्थानों पर, विभिन्न कार्यक्रमों में जाकर एक चादर पर युग साहित्य फैला देती हूँ। हर दिन 500 से 1000 रुपये तक का साहित्य लोग खरीदते हैं। इस साहित्य साधना ने कई लोगों के विचार और जीवन बदले हैं। उन्हें बदलते देखकर परम पूज्य गुरुदेव की अंतर्वेदना बाँटने का जो आनन्द अनुभव होता है, उसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है।"

- श्रीमती किरण गुप्ता

एक मंदिर परिसर में युग साहित्य के साथ श्रीमती किरन गुप्ता

श्रीमती किरण गुप्ता सारा साहित्य ब्रह्मभोज में (आधी कीमत पर) पर बेचती हैं। यह सब वे अपने पतिदेव श्री राकेश गुप्ता जी के भरपूर सहयोग मिलने के कारण ही कर पाती हैं, जो ओएनजीसी में उप महाप्रबंधक हैं।

श्रीमती किरन गुप्ता अहिल्या महिला मण्डल, गोरेगाँव (मुंबई) की संचालिका हैं। उनका युग निर्माणी उत्साह अनुकरणीय और अभिनंदनीय है। खत्तलवाड़ा में पधारे आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी को गद्गद हृदय से अपनी सक्रियता का विवरण देते हुए उन्होंने बताया कि वे बोरीवली, कांदीवली, मालाड, गोरेगाँव आदि अत्यंत व्यस्त रेलवे स्टेशन के पुलों पर, फुटपाथ पर, मंदिर परिसर में, जहाँ भी स्थान मिलता है वहीं चादर पर अपना साहित्य बिछा देती हैं और उसे ब्रह्मभोज में बेचा करती हैं।

गुरुकार्य में कैसी शर्म और शान

श्रीमती गुप्ता ने अकेले ही साहसी पहल की। इसमें उन्हें संघर्ष भी कम नहीं करना पड़ता। वे श्री राकेश गुप्ता-उप महाप्रबंधक, ओ.एन.जी.सी. मुम्बई की धर्मपत्नी हैं, सुखी हैं, सम्पन्न हैं। लेकिन अपनी शान या अहंकार को उन्होंने कभी गुरुकार्य के आड़े नहीं आने दिया। लोगों के विचार बदलने के लिए वह सब किया, जिसे करने में लोग अक्सर झिझकते या हिचकते देखे जाते हैं।

क्या पुलिसवाले, क्या राहगीर, यहाँ तक कि याचकगण भी उन्हें परेशान करते हैं, बार-बार उठाते हैं, लेकिन वे हार नहीं मानतीं। शराबी और लुटेरों तक का उपद्रव आये दिन झेलना पड़ता है। कहती हैं कि लोग अपनी कमाई के लिए और गलत प्रयोजनों के लिए इस तरह के प्रतिकार का सामना करते हैं तो उन्हें गुरुकार्य के लिए ऐसी असुविधाओं से जूझने में कष्ट क्यों होना चाहिए। लोगों के लाख मना करने पर भी वे अवसर देखकर अपना साहित्य बेचती रही हैं।

आनंद देता है लोगों का प्यार और सहकार

लेकिन जैसे-जैसे बात लोगों की बात समझ में आती है, वैसे-वैसे लोगों का प्यार एवं सहयोग भी मिलने लगता है। आये दिन मानस परिवर्तन का कोई न कोई प्रसंग मन को आह्लादित कर देता है।

80 वर्ष के बुजुर्ग को मिला समाधान

• एक बुजुर्ग साहित्य खरीद कर ले गये। फिर बार-बार ले जाने लगे। एक दिन भरी आँखों से उन्होंने बताया कि मेरी पत्नी मुझसे रोज झगड़ा करती है। 80 वर्ष की अवस्था में भी मैं इस परेशानी से मुक्त नहीं हो सकता था। लेकिन गुरुदेव का साहित्य पढ़ने के बाद अब मुझे जीवन की नयी राह मिल गयी है। अब मुझे उसके लड़ने का बुरा नहीं लगता।

वे बुजुर्ग अब अक्सर मेरा सहयोग करते हैं। लोगों को पकड़-पकड़कर लाते हैं और इसका महत्त्व बताते हुए उसे खरीदवाते हैं।

सहयोगी सहेली बन गयी उच्च शिक्षित युवती

• बोरीवली में रहने वाली एक सॉफ्टवेअर इंजीनियर युवती मयूरी को गुरुदेव का साहित्य बहुत पसंद है। एक से सवा लाख रुपये तक की उसकी मासिक आय होगी, लेकिन वह साहित्य बेचने में अक्सर किरण बहिन का साथ देती है। लोगों को आग्रहपूर्वक रोककर साहित्य पढ़ाती है।

पुलिसवाले भी करने लगे इंतजार

• पहले जो पुलिसवाले परेशान किया करते थे, अब वे इंतजार करते दिखाई देते हैं। जब भी उन्हें अवसर मिलता है वे पुस्तक उठाकर पढ़ने लगते हैं।

गाढ़ी कमाई सद्विचार पाने के लिए लगाई

• एक मजदूर जैसी युवती आयी, पाँवों में चप्पल तक नहीं थी। उसने 40 रुपये की छोटी-छोटी पुस्तकें खरीदीं।उसकी दशा देखकर लगा कि उसे मुफ्त में ही पुस्तकें दे दें, लेकिन उसके ही हित में ऐसा करने से अपने को रोक लिया।

• हाल ही में 30 रिक्शेवालों ने किरण बहिन को बुलाकर अपने यहाँ सार्वजनिक गायत्री यज्ञ कराया। इसमें रिक्शेवालों ने 3000 रुपये का साहित्य खरीदा।

मान्यताएँ बदल गयीं

गुरुदेव की अंतर्वेदना के स्पर्श ने श्रीमती किरण गुप्ता को साहसी कदम उठाने की शक्ति दी। ऐसा करने से उनकी कई मान्यताएँ बदल गयीं। पहले उनका मानना था कि लोग आध्यात्मिक पुस्तकों को पसंद नहीं करते, लेकिन अब वे कहती हैं कि लोगों में जीवन को ऊँचा उठाने वाली ऐसी पुस्तकों को पढ़ने की खूब भूख है। जरूरत अपने संकोच को भुलाकर, अहंकार को गलाकर लोगों के बीच घुलने-मिलने की है।

पूरी मुंबई में विचार क्रांति की चाह

श्रीमती किरण गुप्ता का मानना है कि वे गुरुदेव के साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिए हर संभव प्रयास करेंगी। मात्र जीवट के धनी 70 लोगों का सहयोग मिले तो वे मुंबई के हर स्टेशन पर ऐसे ही प्रयास करते हुए हजारों नये लोगों को युग साहित्य संजीवनी से नवजीवन प्रदान करने की इच्छा रखती हैं।

विचार क्रांति के इस प्रयोग से पूर्व वे गोरेगाँव की विभिन्न कॉलोनियों में जाकर घर-घर दस्तक देकर लोगों को आग्रहपूर्वक युग साहित्य खरीदने के लिए प्रेरित करती थीं। इसके माध्यम से भी उन्होंने हजारों लोगों को गुरुदेव के विचारों से जोड़ा है।

ऐतिहासिक तीर्थ कन्याकुमारी में गायत्री अश्वमेध महायज्ञ सम्पन्न

लाखों युग सृजेताओं ने राष्ट्र की एकता, अखण्डता की रक्षा और देव संस्कृति को घर-घर स्थापित करने के संकल्प लिये

दीपयज्ञ के पावन अवसर पर आदरणीया जीजी एवं आदरणीय डॉ. साहब युग साधकों में राष्ट्र के नवसृजन के लिए सत्संकल्प जगाते हुए

गायत्री अश्वमेध महायज्ञ में यजन करते तमिल, मलयाली, मारवाड़ी एवं समस्त वर्गों के आस्थावान लोग, दायें विश्व कल्याणार्थ आहुतियाँ समर्पित करते रूस से पधारे विशिष्ट मेहमान

अथाह आस्था का संचार करने वाली अभूतपूर्व कलश यात्रा

गायत्री अश्वमेध महायज्ञ, कन्याकुमारी का शुभारंभ अभूतपूर्व ऐतिहासिक कलश यात्रा के साथ हुआ। माँ भारती के पग पखारते तीन सागरों के संगम पर शायद ही पहले कभी श्रद्धा के सागर की ऐसी उत्तुंग लहरें देखी गयी हों। श्रद्धेया जीजी ने अपने स्नेह से कलश यात्रा में शामिल हजारों लोगों की भावनाओं का अभिसिंचन करते हुए इन पलों को अविस्मरणीय बना दिया।

28 जनवरी की दोपहर 2 बजे से यह कलश यात्रा आरंभ हुई। विवेकानंदपुरम के गणेश मंदिर से केन्द्र के प्रमुख श्री बालकृष्णन जी ने हरी झण्डी दिखाकर इसे रवाना किया। कुमारी भगवती मंदिर से होते हुए अश्वमेध यज्ञशाला में पहुँची। नागरकोइल वासियों ने रास्ते में ठण्डे पानी, छाछ एवं फलों के रस आदि की व्यवस्था की थी।

5111 कलशों के साथ विशाल शोभायात्रा निकली। सभी कलशधारी बहिनों ने कलश यात्रा के लिए एक जैसी पीले रंग की साड़ियाँ पहनी थीं।

विद्यार्थियों के बैण्ड : अमृतानन्द विद्यालय, डी.वी.डी. विद्यालय, हिन्दू कॉलेज आदि विद्यालयों के 60-60 बच्चों के बैण्ड तथा दो व्यावसायिक बैण्डों ने कलश यात्रा की शोभा बढ़ाई। इनके संयोजन में विवेकानन्द केन्द्र विद्यालय के प्राचार्य श्री अब्राहम लिंकन की प्रमुख भूमिका रही।

आकर्षक झाँकियाँ : कलश यात्रा में यज्ञ भगवान, गायत्री माता, सप्त ऋषि, गुरुदेव और माताजी की झाँकियों के साथ दो हाथी और एक सफेद घोड़े ने कलश यात्रा की शोभा बढ़ाई।

अनेक समाजों का सहयोग मिला : अश्वमेध महायज्ञ की कलश यात्रा में नगर के अनेक समाज-राजपुरोहित, चौधरी समाज, राजपूत, सुथार, गूजर, माली, बागरी, जैन, गुजराती, बंगाली, मराठी, दर्जी, ब्राह्मण, घासी, तमिल ब्राह्मण, मलयाली आदि ने अपनी-अपनी झाँकियाँ शामिल कर गायत्री परिवार के देव संस्कृति दिग्विजय के प्रयासों को प्रोत्साहित किया। कलश यात्रा का प्रभार श्री लाजपत राय कचोलिया ने सँभाला।

आदरणीया शैल जीजी के विशिष्ट उद्गार

कलश में देवशक्तियाँ निवास करती हैं। देवशक्तियों को वही धारण कर सकता है, जिसमें दया हो, ममता हो, संवेदना हो। यह सामर्थ्य केवल नारी के पास है। वह तो भगवान को भी अपनी गोद में खिलाने वाली शक्ति है।

संवेदनाओं का विस्तार ही अश्वमेध है। प्रतिभाओं को राष्ट्र के निमित्त सौंप देने का नाम ही अश्वमेध है।

कहाँ हैं वो श्रवणकुमार

आज भाव-संवेदनाओं के अकाल में लगता है हमारे वो श्रवण कुमार कहीं खो गये हैं, जो अपने माता-पिता को अपने कंधे पर काँवड़ में बिठाकर उनकी इच्छा पूरी करने के लिए ले जाया करते थे। काँवड़ तो आज भी लाखों की संख्या में उठायी जाती हैं, लेकिन उनमें केवल कामना का जल ही होता है। न जाने वो भाव संवेदना कहाँ छूट गयी जो माता-पिता को तृप्ति प्रदान करती थी।

माँ गायत्री और यज्ञ भगवान भारतीय संस्कृति के माता-पिता हैं। जब-जब उनकी अवमानना हुई है, तब-तब कलयुग का द्वार खुला है और यह द्वार खुलने के साथ ही समाज में छा जाती है अशांति, बन जाता है विग्रह का वातावरण। परम पूज्य गुरुदेव ने 2000 वर्षों से कीलित, शापित गायत्री माता को अपनी साधना से तमाम बंधनों से मुक्त कराकर मानवता का बड़ा उपकार किया है। समाज को आज जरूरत उन श्रवण कुमारों की है, जो उन्हें अपने कंधे पर बिठाकर घर-घर पहुँचा सकें।

गायत्री मंत्र की असीम सामर्थ्य

“ गायत्री मंत्र में इतनी ताकत है कि अगर आधे भारतीय भी एक साथ एक समय में गायत्री महामंत्र का उच्चारण करें तो उससे 6000 खरब मेगावाट शक्ति पैदा होगी। यह भारत में आज पैदा होने वाली शक्ति से आठ गुनी ज्यादा है। - **आदरणीया शैल जीजी**

विवेकानन्द केन्द्र के सहयोग से कन्याकुमारी में बनेगा गायत्री चेतना केन्द्र

लिविंग मेमोरियल बने विवेकानन्द केन्द्र

- आदरणीय श्री बालकृष्णन

श्री बालकृष्णन जी अश्वमेध के मंच से अपने विचार व्यक्त करते हुए

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि मेरे मिशन का उद्देश्य घर-घर में सनातन की स्थापना करना है। इस केन्द्र के संस्थापक श्री एकनाथ रानडे कहा करते थे, ''यह स्मारक पत्थर का स्मारक है, मैं इसे लिविंग मेमोरियल बनाना चाहता हूँ।'' स्वामी जी का मिशन, रानडे जी का मिशन आज कुछ करने की इच्छा रखने वाले युवाओं का मिशन बने, तभी यह लिविंग मेमोरियल बन पायेगा। हिंदुत्व के विस्तार के लिए आपने जो प्रयास किया है, उससे हमें अत्यंत आनन्द हुआ।

श्री बालकृष्णन जी शांतिकुंज आ चुके हैं। गुरुदेव की युग निर्माण योजना और अश्वमेध महायज्ञ से प्रभावित होकर उन्होंने विवेकानन्द केन्द्र परिसर में ही गायत्री चेतना केन्द्र के निर्माण के लिए भूमि आवंटित करने की घोषणा की। शीघ्र ही वहाँ चेतना केन्द्र निर्माण का कार्य आरंभ हो जायेगा।

हम मिलकर कार्य करेंगे

- आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

आद. डॉ. साहब

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने अश्वमेध महायज्ञ और गायत्री चेतना केन्द्र के निर्माण के लिए विवेकानन्द केन्द्र, कन्याकुमारी से मिल रहे सहयोग के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि देश में विवेकानन्द केन्द्र की 830 शाखाएँ हैं। आप शांतिकुंज को 831वीं शाखा मानें। हमारे उद्देश्य एक हैं, हम साथ मिलकर कार्य करेंगे। शैल (हिमालय) से सागर तक की जो यह यात्रा आरंभ हुई है वह अनवरत चलती रहेगी।

“ दक्षिण भारत में हिन्दुत्व का अभिसिंचन

हिन्दू कोई धर्म नहीं, एक जीवन शैली है। इसमें दया है, उदारता है, दानशीलता है, सबके प्रति सम्मान और परोपकार की भावना है। हिन्दू सबको साथ लेकर ऊँचा उठने की सोचता है। हमें हिन्दुत्व पर गर्व है। हमारी यही सनातन संस्कृति सारे विश्व में सुख-शांति एवं परस्पर सौहार्द्र का वातावरण विनिर्मित करेगी।

इस अश्वमेध के प्रभाव से पूरे दक्षिण भारत में हिंदुत्व का अभिसिंचन होगा। तीन सागरों के संगम पर भारत की एकता और अखण्डता के लिए हो रहा यह महान धर्मानुष्ठान लाखों-करोड़ों लोगों को आत्मबल सम्पन्न बनाकर उनमें समाज और संस्कृति की सेवा के भाव जगायेगा। जन-जन में सृजन चेतना का अभ्युदय ही राष्ट्र के उत्कर्ष का आधार है। जाग्रत् आत्माओं की राष्ट्रनिष्ठा ही परम पूज्य गुरुदेव के सतयुगी संकल्पों और स्वामी विवेकानन्द के सपनों के भारत को साकार करेगी। - **आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी**

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा विश्व प्रसिद्ध तीर्थ कन्याकुमारी में आयोजित गायत्री अश्वमेध महायज्ञ में देव शक्तियों के आह्वान की मंगलवेला में यह उद्‌गार व्यक्त किये। वे इस महान अनुष्ठान की सफलता के लिए पूरे देश ही नहीं, पूरे विश्व में उभरी श्रद्धा-सक्रियता का अभिसिंचन कर रहे थे। अश्वमेध के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि टूटते हुए देश को एक और अविभाजित भारत के निर्माण की ओर अग्रसर करना, मानव मन को अशांत करती हलचलों और प्रकृति की प्रतिकूलताओं का शमन करना, नारी उत्कर्ष जैसे महान उद्देश्यों के लिए यह महान अनुष्ठान आयोजित किया गया है। उन्होंने कहा कि यह दुर्बुद्धि को सद्‌बुद्धि की ओर प्रेरित करने वाली पूर्णतः वैज्ञानिक प्रक्रिया है।

गायत्री अश्वमेध महायज्ञ

दिनांक : 28, 29, 30, 31 जनवरी 2016
स्थान : विवेकानन्द केन्द्र, कन्याकुमारी (तमिलनाडु)

43 अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा पूरे विश्व में आयोजित किये जा रहे गायत्री अश्वमेध महायज्ञों की शृंखला का यह 43वाँ और भारतीय भूमि पर आयोजित होने वाला 30वाँ कार्यक्रम था।

20 हजार लोगों ने इसमें भाग लिया। यज्ञभूमि की उपलब्धता को देखते हुए मात्र 151 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ यह महान अनुष्ठान सम्पन्न हुआ। दक्षिण भारत के श्रद्धालुओं को इसका अधिक से अधिक लाभ मिले, इस दृष्टि से उत्तर भारत के लोगों से कन्याकुमारी नहीं पहुँचने का आग्रह किया गया था, जिसका उन्होंने पूरा-पूरा सम्मान किया। पूरे देश के समयदानी स्वयंसेवकों ने इस महायज्ञ में अपनी सेवाएँ दीं। लेकिन जनमानस में युगचेतना के आरोपण की दृष्टि से अन्य अश्वमेध महायज्ञों से यह कहीं अधिक ही प्रभावशाली सिद्ध हुआ।

17 देशों के श्रद्धालु गायत्री अश्वमेध महायज्ञ, कन्याकुमारी में भाग लेने पहुँचे थे। यज्ञ में यू.एस., यू.के., कनाडा, फ्रांस, रशिया, यूक्रेन, तंजानियाँ, लिथुआनियाँ, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, यूएई, मालद्वीप, नेपाल, बेलारूस, इटली, सिज़ोक रिपब्लिक आदि देशों से आये लोगों ने भाग लिया।

78 साधना महापुरश्चरण हुए : वसन्त पंचमी 21 जनवरी 2015 से 27 जनवरी 2016 तक गायत्री अश्वमेध महायज्ञ कन्याकुमारी की सफलता के लिए गायत्री साधना महापुरश्चरण निरंतर चलते रहे। देश-विदेश के साधकों ने इसमें भाग लेते हुए 78 साधना महापुरश्चरण सम्पन्न किये। साधना महाभियान का समन्वय श्री राजेश सिंह बैंगलोर ने किया।

03 लाख मंत्रलेखन साधना अनुष्ठान : एक वर्ष के प्रयाज में अश्वमेध महायज्ञ, कन्याकुमारी के निमित्त 3 लाख लोगों ने मंत्र लेखन साधना की।

06 प्रांतों में प्रचार : अश्वमेध महायज्ञ के निमित्त दक्षिण के छः प्रांत-आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और पुदुचेरी में शक्ति कलश का भ्रमण और प्रचार-प्रसार किया गया। इसके माध्यम से 1 लाख घरों में 11 लाख रुपये का युग साहित्य पहुँचाया जा सका। श्री रमेश गड़ौदिया सेलम वालों ने यह ब्रह्मभोज में उपलब्ध कराया था। हजारों लोगों ने अखण्ड ज्योति पत्रिका की सदस्यता ग्रहण की। तमिल, मलयालम, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी, हिन्दी आदि सभी भाषा भाषियों में मिशन का भरपूर प्रचार हुआ।

900 गाँवों का मंथन : स्थानीय प्रमुख संगठन विवेकानन्द केन्द्र, विवेकानन्द आश्रम, स्वामी टोपो, अमृतानंदमयी आश्रम, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, धर्म रक्षा समिति आदि के सहयोग से कन्याकुमारी जिले के 900 गाँवों में शक्ति कलश का भ्रमण कराया गया।

यहाँ त्याग की पूजा होती है

“ मित्रो! यह देश बड़ा विलक्षण देश है। पश्चिमी देशों में मिलियनर्स-बिलियनर्स की चर्चा होती है, लेकिन हमारे देश में त्याग की पूजा होती है। यहाँ जो निजी चाह छोड़कर समाज के लिए अपना सब कुछ खो देता है, उसको सबसे बड़ा सम्मान मिलता है। स्वामी विवेकानन्द ने अपनी प्रतिभा समाज के लिए लगायी तो वे लाखों-करोड़ों लोगों के जीवन-आदर्श बन गये। कपड़े तक उतार देने वाले महावीर और राजपाट छोड़ देने वाले बुद्ध देश-विदेशों में पूजनीय हो गये।

राष्ट्र देवता का यजन करें

“ शतपथ ब्राह्मण का सूत्र है-इदं राष्ट्रे अश्वमेधः। अर्थात् अश्वमेध के द्वारा राष्ट्र का यजन करो। हमें फिर से विराट भारत बनाने के लिए आश्वमेधिक पुरुषार्थ करना होगा। राष्ट्र ही भगवान का विराट रूप है। राष्ट्र ही हमारा आराध्य है, इसके कण-कण के लिए हमें मर मिटना चाहिए। जब तक राष्ट्र संगठित नहीं होता, अखण्ड भारत का पुनर्निर्माण नहीं हो जाता, तब तक आश्वमेधिक पुरुषार्थ चलता रहेगा। इस राष्ट्र के नागरिक होने के नाते हमें अपने राष्ट्र पर छाये आलस्य, दरिद्रता, बीमारी, अस्वच्छता आदि विकारों को दूर करना है। असली युद्ध इन्हीं अवांछनीयताओं से है, दुर्भावानाओं से, दुर्बुद्धि से है।

अशोभनीय आचरण का प्रतिकार करो

“ युद्धभूमि में किंकर्त्तव्य-विमूढ़ अर्जुन से भगवान श्रीकृष्ण ने कहा-इस निर्णायक घड़ी में कायरता और नपुंसकता तुम्हें शोभा नहीं देती।

आज समाज दुर्दशाग्रस्त है। परिस्थितियाँ प्रतिकूल हैं। ऐसे में हर जाग्रत् व्यक्ति के मन में यह प्रश्न उठता है कि हम क्या करें?

मैं कहता हूँ कि अपने आप से एक प्रश्न रोज अवश्य पूछें कि हमें क्या शोभा देता है, क्या नहीं। साधनापूर्वक मानवीय गरिमा के अनुरूप आचरण करने का साहस विकसित करें।

नकारात्मक चिंतन हमें शोभा नहीं देता, गलत रास्ते पर चलना, काम-वासनाओं का चिंतन, राष्ट्र की निंदा करना हमें शोभा नहीं देता। अस्वच्छता, लूटखसोट हमें शोभा नहीं देती। उठो, जागो और अपने अशोभनीय आचरण का प्रतिकार करो।

अपना जीवन लक्ष्य पहचानो

“ हमारे जीवन का लक्ष्य है परमसत्ता का ज्ञान प्राप्त करना, महापुरुषों के जीवन से ज्ञान प्राप्त करना और प्राप्त ज्ञान के आधार पर ऊँचाई की ओर, आदर्शों की ओर अग्रसर होना।

अश्वमेध महायज्ञ के कार्यक्रमों का विवरण और परिजनों के सेवा-सहयोग के समाचार पृष्ठ 6 पर पढ़ें।

कन्याकुमारी की समृद्ध आध्यात्मिक विरासत

माता पार्वती की तपःस्थली : भारत के सबसे दक्षिणी छोर (जीरो माइल) पर स्थित कन्याकुमारी का कई कारणों से आध्यात्मिक महत्त्व है। यह वह स्थान है जहाँ कुँवारी कन्या की अवस्था में भगवान शिव को पाने के लिए माता पार्वतनी ने कठोर तप किया था। वहाँ की शिला पर आज भी माता पार्वती के चरण चिह्न हैं। इन दिनों वहाँ कन्याकुमारी माता भगवती का दिव्य मंदिर बना हुआ है।

स्वामी विवेकानन्द की बोधभूमि : कन्याकुमारी की विशाल शिला पर बैठकर ही स्वामी विवेकानन्द ने 25, 26 एवं 27 दिसम्बर 1892 को तीन दिन, तीन रात तक सतत ध्यान-चिंतन करते हुए भारत के पतन के कारण की खोज की और फिर भारतवासियों को, हिंदुत्व को संगठित करने के लिए देश-विदेश की यात्रा पर निकल पड़े थे। इन्हीं ऐतिहासिक क्षणों की स्मृति में वहाँ श्री एकनाथ रानडे ने रॉक मेमोरियल की स्थापना की है।

शंकराचार्य जी की तपःस्थली : यह आदि शंकराचार्य जी की तपःस्थली भी रही है।

अश्वमेध की सफलता और विश्वकल्याण की प्रार्थना

समाजोत्कर्ष के लिए तप की पुण्य परम्परा निभा रहे श्रद्धेय द्वय डॉक्टर साहब एवं शैल जीजी ने कन्याकुमारी माता मंदिर और विवेकानन्द मेमोरियल के दर्शन किये, शांति-सद्‌भाव की कामना से हो रहे अश्वमेध महायज्ञ की सफलता की प्रार्थना की। उन्होंने तिरुवनन्तपुरम में विराजमान भगवान पद्‌मनाथ के दर्शन-पूजन कर सबके मंगल की प्रार्थना की।

सनराइज़ पॉइंट पर मंगल ध्यान

कन्याकुमारी में सनराइज़ पॉइंट पर दिव्य निनाद करती सागर की लहरों और दूसरी ओर उगते सूर्य के दिव्य दर्शन का आनन्द विलक्षण था। युग साधकों ने वहाँ दो दिन आदरणीय डॉ. साहब के निर्देशों पर उगते सूर्य का विशिष्ट ध्यान किया।

आदरणीय डॉ. साहब, आदरणीया जीजी परिजनों को सागर तट पर उगते सूर्य का ध्यान कराते हुए

दक्षिण में प्रवाहित गुरुदेव-माताजी के स्नेह-अनुदान 2018 में हैदराबाद में होगा गायत्री अश्वमेध महायज्ञ

दीपयज्ञ की मंगलवेला आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने दक्षिण भारत में निरंतर प्रखर होते देव संस्कृति दिग्विजय अभियान की शानदार सफलता का उल्लेख किया। उन्होंने श्री अश्विनी सुब्बाराव द्वारा हैदराबाद में गायत्री चेतना केन्द्र के निर्माण तथा उनके द्वारा तिरुपति में, श्री जोगसिंह राजपुरोहित द्वारा मदुरई में और श्री हीरसिंह राजपुरोहित द्वारा बैंगलोर में गायत्री अश्वमेध महायज्ञों के लिए की गयी साहसिक पहल का उल्लेख किया। इसके साथ ही युग निर्माण आन्दोलन के लिए साहसिक कदम बढ़ाने वाले महानुभावों पर हो रही गुरुदेव-माताजी के अनुदानों की वर्षा का भी उल्लेख किया।

गायत्री अश्वमेध महायज्ञ आयोजन में विवेकानन्द केन्द्र प्रमुख श्री बालकृष्णन जी और सचिव श्री हनुमंत राव जी द्वारा समर्पित भाव से की गयी सेवाओं का विशेष उल्लेख किया। इसी मंच से उन्होंने वर्ष 2018 में हैदराबाद में गायत्री अश्वमेध महायज्ञ किये जाने की घोषणा भी की।

स्मारिका एवं युग साहित्य का विमोचन

आदरणीया जीजी एवं आदरणीय डॉ. साहब ऊपर स्मारिका और नीचे विभिन्न पुस्तकों का विमोचन करते हुए

अश्वमेध महायज्ञ कन्याकुमारी की स्मृति में एक स्मारिका 'सागर संगम' प्रकाशित की गयी थी, मंच पर इसका विमोचन आदरणीय डॉ. साहब एवं आदरणीया जीजी ने किया। इसके अलावा तमिल भाषा में 10 और मलयालम में 7 नव प्रकाशित पुस्तकों का विमोचन भी हुआ।

रशियन भाषा में ऑडियो बुक 'गायत्री महाविज्ञान' बनायी गयी है। इसका भी विमोचन दीपयज्ञ के अवसर पर हुआ।

तीन भाषाओं में हुआ महायज्ञ का संचालन

कन्याकुमारी तमिलनाडु का हिस्सा है, लेकिन त्रिवेन्द्रम (केरल) के समीप है। अतः वहाँ तमिल और मलयालम दोनों ही भाषाओं का समान प्रभाव है। इसे देखते हुए मंच से हिंदी भाषा में हो रही टिप्पणियों और संदेश का तमिल और मलयाली भाषाओं में भी अनुवाद किया जाता रहा। वहाँ लगी प्रदर्शनी की टिप्पणियाँ भी तीन भाषाओं में लगायी गयी थीं।

गायत्री अश्वमेध महायज्ञ, कन्याकुमारी

एकता, समता, ममता, शुचिता सम्पन्न उज्ज्वल भविष्य का क्रांतिकारी उद्घोष

दीपयज्ञ की मंगल वेला में नवयुग के स्वागत के भाव के साथ उतारी गयी देवशक्तियों की आरती

गायत्री अश्वमेध महायज्ञ, कन्याकुमारी 28 से 31 जनवरी की तारीखों में आदरणीया शैल जीजी एवं आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के सान्निध्य में भरपूर उमंग और उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। लाखों लोगों ने प्यार और सहकार से भरेपूरे विराट देव परिवार के दर्शन किये। अश्वमेध के प्रयोजनों की व्याख्या करते हुए आदरणीया जीजी ने कहा कि सद्विचार, सत्कर्म, सदाचरण के समन्वय का नाम है अश्वमेध। महायज्ञ और दक्षिण भारत जोन के प्रभारी शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री बृजमोहन गौड़ ने कहा कि एकता, समता, ममता से भरे उज्ज्वल भविष्य का संदेश है अश्वमेध। यह विचार क्रांति का उद्घोष है। चार दिन के महायज्ञ ही नहीं, यज्ञ के एक वर्षीय प्रयाज और एक माह से यज्ञ स्थल पर चल रही तैयारियों में यह दोनों ही उक्तियाँ चरितार्थ हो रही थीं।

हर समाज से मिला भरपूर सहयोग

यह स्थान विशेष ही नहीं दक्षिण के सभी प्रांतों का समन्वित पुरुषार्थ था। परम पूज्य गुरुदेव के सतयुगी संकल्पों को साकार करने के लिए हो रहे प्रयासों के इस स्वर्णिम अध्याय में अपने श्रम से, अपनी साधना से, अपनी भावनाओं से सहयोग करने पूरे देश के ही नहीं, विश्वभर के लोग यज्ञ स्थल पर उपस्थित थे।

आदरणीया जीजी ने सभी के सेवा समर्पण के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा, ''जो हाथ अपने घरों में स्वयं पानी का ग्लास नहीं भरते थे, उन्हें गोबर से यज्ञशाला लीपते देखा। जो घुटने के दर्द से परेशान थीं, वे बहिनें मस्तक पर कलश धारण किये मीलों लम्बी कलश यात्रा में शामिल हुईं। यही श्रद्धा-सद्भावना कल के सुनहरे भविष्य का आधार बनेगी।'' चार दिन के कार्यक्रमों की अपनी-अपनी विशेषताएँ थीं।

कलश यात्रा के समय लगा जैसे ऋतुराज वसंत धरती पर अवतरित हुए हैं। ऐसा लगा जैसे देवताओं ने अश्वमेध नगरी पर गैंदे के फूलों की वर्षा की हो।

देवपूजन के समय विशिष्ट स्वर और गति के साथ देव शक्तियों का आह्वान हुआ। ऐसा लगा जैसे साक्षात देवलोक में माँ सरस्वती की वीणा की झंकार मन को आह्लादित कर रही हो। देवपूजन के दिन भी पाँच पारी यज्ञ सम्पन्न हुआ।

दीक्षा लेने वालों की संख्या हजारों में थी। आदरणीय डॉ. साहब ने जीवन में समर्थ गुरु के अवलम्बन की आवश्यकता और परम पूज्य गुरुदेव जैसी विराट दैवी चेतना को गुरुरूप में वरण करने के सौभाग्य को विस्तार से समझाया। दीक्षा अनुबंधों के साथ युग निर्माण आन्दोलन में सक्रिय सहयोग का अणुव्रत दिलाया। आदरणीया शैल जीजी ने अपने श्रीमुख से सभी को गायत्री मंत्र की दीक्षा दिलायी।

कार्यकर्त्ता गोष्ठी में युवा क्रांति वर्ष और हैदराबाद में वर्ष 2018 में होने जा रहे अश्वमेध महायज्ञ की कार्ययोजनाओं पर मुख्य रूप से चर्चा हुई। श्री अश्विनी सुब्बाराव जी को प्रमुख दायित्व सौंपे गये।

दीपयज्ञ की दिव्यता ही अलौकिक थी। वहाँ युग निर्माणी साधकों की प्रखर प्राण चेतना का उल्लास प्रज्वलित दीपकों के दिव्य प्रकाश पर भारी पड़ रहा था। हजारों लोगों ने विविध आन्दोलनों में सक्रिय भागीदारी के संकल्प लिये।

31 जनवरी को कार्यक्रम की महापूर्णाहुति सम्पन्न हुई। स्वामी विवेकानन्द के राष्ट्र को संगठित कर सनातन संस्कृति की गौरव-गरिमा को पुनः स्थापित करने के संकल्प तथा विवेकानन्द केन्द्र, कन्याकुमारी के प्रयासों को बल मिला।

ज्ञानक्रांति का सफल प्रयोग

10 लाख का साहित्य बिका, चेन्नई शाखा ने दी सेवाएँ

गायत्री अश्वमेध महायज्ञ में एक विशाल पुस्तक प्रदर्शनी लगायी गयी थी। वहाँ तेलुगु, तमिल, कन्नड, मलयालम, अंग्रेजी, हिंदी, ओड़िया, मराठी, बंगाली, असमिया, गुजराती और रशियन आदि भाषाओं में युग साहित्य उपलब्ध था। चार दिनों में 10 लाख रुपये से अधिक का साहित्य लोगों ने खरीदा। चेन्नई शाखा ने पुस्तक मेले की जिम्मेदारी सँभाली। श्री बिन्देश्वरी प्रसाद सिंह एवं श्री राजेश अग्रवाल, रजनीकांत मिश्रा के मार्गदर्शन में सेलम, कोयम्बतूर, मदुरै, कालीकट शाखाओं के परिजनों ने इसके लिए सेवाएँ प्रदान कीं।

साहित्य विक्रय पटल पर तमिल, मलयाली पाठकों का उत्साह जो चारों दिन हर क्षण दिखाई दिया

ऋषियुग्म का जीवन दर्शन और मिशन की प्रदर्शनी

कन्याकुमारी में कई भाषाओं के प्रचलन और पर्यटकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए परम पूज्य गुरुदेव के जीवन दर्शन पर विशेष प्रदर्शनी तैयार की गयी थी। लगभग 120 विशाल पैनल वाली प्रदर्शनी में गुरुदेव के जीवन और गायत्री के दर्शन को आकर्षण एवं प्रभावशाली ढंग से दर्शाया गया था। दक्षिण में मिशन द्वारा चलायी जा रहे विचार क्रांति अभियान एवं सप्त आन्दोलनों की झाँकी इन पैनलों में देखकर लोगों को मिशन के विराट स्वरूप को समझने में बड़ी आसानी हुई। प्रदर्शनी में दर्शकों की उपस्थिति निरंतर बनी रही। विविध पैनलों की टिप्पणियाँ तमिल, मलयालम और हिंदी भाषाओं में थीं। इसमें आकर्षक झाँकी एवं दक्षिण शैली का समावेश रहा।

आदरणीय डॉ. साहब एवं आदरणीया जीजी प्रदर्शनी का अवलोकन (बायें) और उद्घाटन (दायें) करते हुए

सांस्कृतिक कार्यक्रम से कलाकार भी प्रभावित

पहले दिन सायंकाल आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम कलश यात्रा की थकान को आनन्द और उल्लास में बदलने में सफल रहे। मलयालम, तमिल और हिन्दी में गीत-संगीत के कार्यक्रम को कला जगत के मँजे हुए कलाकारों ने प्रस्तुत किया। तमिल-मलयालम गायिका श्रीमती अम्बली, संगीत निदेशक श्री आचार्य अनंत कृष्णन, गायक श्री सुनील कुमार एवं श्री संतोष कुमार ने प्रमुख योगदान दिया। शांतिकुंज की लोकमंगल की दिशाधारा से वे भी प्रभावित हुए। उन्होंने शांतिकुंज आकर संजीवनी साधना सत्र करने का मन बनाया है। श्री वी.एस. जोशी कार्यक्रम संयोजक थे।

कुछ उल्लेखनीय, उत्साहवर्धक प्रसंग

श्रद्धा और सेवाधर्म के आदर्श

श्री हनुमंत राव एवं श्री बृजमोहन गौड़

विवेकानन्द केन्द्र के सचिव श्री हनुमंत राव गायत्री अश्वमेध महायज्ञ को पूरी तरह से अपना ही कार्यक्रम मानते हुए एक मौन समर्पित स्वयंसेवक के रूप में सक्रिय रहे। जहाँ भी जरूरत पड़ी, उन्होंने बड़ी निष्ठा के साथ अपनी जिम्मेदारियाँ निभाईं। आदरणीय डॉ. प्रणव जी ने उनकी श्रद्धा एवं सेवाभावना का सम्मान करते हुए मंच से इस अश्वमेध महायज्ञ के हनुमान की संज्ञा दी। अश्वमेध यज्ञ प्रभारी श्री बृजमोहन गौड़ जी के विशेष आग्रह पर ही वे मंच पर आने को सहमत हुए थे।

गायत्री चेतना केन्द्र कोयंबटूर के ट्रस्टी श्री उपेन्द्र सिंह ने एक माह का समयदान कर निर्माण कार्य में अविस्मरणीय सहयोग दिया। उन्होंने दुभाषिये की भूमिका निभाकर केन्द्रीय परिजनों की बड़ी सहायता की।

इचलकरंजी के श्री राजेन्द्र जी (राजू) ने अपने 500 स्वयंसेवकों के साथ अथक श्रम करते हुए श्रद्धापूर्वक भोजन व्यवस्था सँभाली।

केन्द्रीय भोजनालय प्रभारी श्री रमन जी ने तीन सप्ताह तक प्रतिदिन देशी गाय का 50 लीटर दूध निःशुल्क उपलब्ध कराया। उन्होंने कहा कि हमें मेहमानों की सेवा में भरपूर आनन्द आ रहा है।

पं.श्रीराम शर्मा आचार्य स्मृति उपवन की स्थापना

डॉ. साहब एवं जीजी वृक्षारोपण करते हुए

विवेकानंद केन्द्र परिसर में पं.श्रीराम शर्मा आचार्य स्मृति उपवन की स्थापना होने जा रही है। आदरणीय डॉ. साहब एवं आदरणीया शैल जीजी ने पाँच पौधे लगाकर इसका शुभारंभ किया।

कन्याकुमारी में चेतना केन्द्र के निर्माण का स्वागत

विवेकानन्द केन्द्र के प्रमुख श्री बालकृष्णन जी ने कन्याकुमारी में गायत्री चेतना केन्द्र के निर्माण के लिए भूमि उपलब्ध कराने की घोषणा की। जैसे ही यह घोषणा हुई, लोगों ने इसके निर्माण में उदारतापूर्वक आर्थिक सहयोग करने की घोषणा भी आरंभ कर दी। सीधा प्रसारण देख रहे परिजनों ने भी फोन से अपने अनुदान देने के संकल्प घोषित किये।

मारवाड़ी समाज ने लिया व्यसनमुक्ति संकल्प

त्रिवेन्द्रम, नागरकोइल एवं मार्तण्ड में निवास करने वाले मारवाड़ी कार्यकर्त्ताओं ने इस महायज्ञ में अपने-अपने व्यसन छोड़ने की सामूहिक घोषणा की। उन्होंने व्यसन मुक्ति के लिए निरंतर अभियान चलाते रहने का संकल्प भी लिया।

दिशा चैनल पर सीधा प्रसारण

दिशा चैनल पर प्रतिदिन प्रातःकाल और सायंकाल के कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण हुआ। शांतिकुंज की लाइव स्ट्रीमिंग सेवाओं के माध्यम से विश्व के लाखों लोगों ने इस महायज्ञ को देखा, सुना।

व्यवस्थाओं में अग्रणी भूमिका निभाई

गायत्री अश्वमेध महायज्ञ, कन्याकुमारी दक्षिण भारत जोन के प्रभारी शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री बृजमोहन गौड़ के मार्गदर्शन में आयोजित हुआ। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं आदरणीया शैल जीजी सहित शांतिकुंज के लगभग 100 कार्यकर्त्ताओं की टोली इस महायज्ञ की विविध व्यवस्थाओं को सँभालने कन्याकुमारी पहुँची थी। इस महायज्ञ के आयोजन की व्यवस्थाओं में जुटे श्री उमेश शर्मा, उत्तम गायकवाड़ एवं श्रीमती प्रशांति शर्मा ने अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

भोजनालय की व्यवस्था में नागरकोइल व कन्याकुमारी के श्री भैरोसिंह राठौड़, नेमाराम चौधरी व भूराराम चौधरी, त्रिवेन्द्रम के श्री प्रभुदान रतनु ने श्री जमुना विश्वकर्मा जी का सहयोग किया।

यज्ञशाला प्रभारी श्री कामता प्रसाद साहू के साथ ईरोड के कार्यकर्त्ता सर्वश्री करमसी भाई पटेल, देवेन्द्र जी, दीपा बहन, बड़ौदा के डीवीआर मूर्ति, विशाखापट्टनम की श्रीमती सावित्री अक्का एवं आंध्र प्रदेश, तेलंगाना के कार्यकर्त्ताओं ने प्रमुख योगदान दिया।

परिवहन व्यवस्था में श्री विष्णु जांगिड़ एवं एर्नाकुलम के श्री अशोक अग्रवाल प्रमुख सहयोगी थे।

मल्टीमीडिया में गोवा एवं पुणे की टीम का प्रमुख योगदान रहा। जलकलश यात्रा की जिम्मेदारी कोचीन के श्री लाजपत कचौलिया और उनके साथियों ने सँभाली थी।

मंच से हो रही टिप्पणियों और वक्तव्यों, सूचनाओं का श्री के. एम. मोहन तमिल में एवं श्री ज्योतिष प्रभाकरन ने मलयालम भाषा में अनुवाद किया। चारों दिन श्रीमती शोभा राजपुरोहित, श्री विनेश जोशी और श्री सत्यप्रकाश यादव द्वारा बारी-बारी से तमिल और मलयालम भाषा में प्रज्ञागीत प्रस्तुत होते रहे। इसके लिए उन्होंने तीन माह का कड़ा अभ्यास किया था।

विवेकानन्द केन्द्र विद्यालय का इस महायज्ञ में विशिष्ट योगदान रहा। प्राचार्य श्री अब्राहम लिंकन ने 30 कमरे और 2 बड़े हॉल आवास एवं विविध व्यवस्थाओं के लिए उपलब्ध कराये थे। स्कूल के शिक्षक-विद्यार्थियों ने भी बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। कलश यात्रा में अपना बैण्ड शामिल किया।

मन पत्थर या काँच का बना नहीं होता जो बदला न जा सके। प्रयत्न करने पर मन को सुधारा और बदला भी जा सकता है।

प्रखर प्रयाज के आधार पर गायत्री महायज्ञों की बढ़ रही है लोकप्रियता

108 कुण्डीय यज्ञ, 56 गाँवों में जनचेतना जगाई

बायें - यज्ञ-संस्कार महोत्सव में भाग लेते परिजन एवं दायें- चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन करते नवयुवक

विश्रामपुरी, कोण्डागांव (छत्तीसगढ़): विश्रामपुरी में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं पावन प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन 27 से 31 दिसम्बर की तारीखों में सम्पन्न हुआ। 56 गाँवों में शक्ति कलश यात्रा का भ्रमण कराते हुए जन-जन को यज्ञ का भावभरा आमंत्रण दिया गया था। विपरीत परिस्थिति में भी लोगों में श्रद्धा, विश्वास व जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। शांतिकुंज से पहुँची श्री राजकुमार भृगु की टोली ने युगऋषि का संदेश देते हुए हजारों लोगों में युगधर्म के प्रति आस्था जगायी।

ग्रामीण क्षेत्र होने के कारण स्वयंसेवकों के लिए आवासीय व्यवस्था में परेशानी आ रही थी। लोगों ने अपने घरों में ही चार-चार, आठ-आठ समयदानियों को ठहरा कर इसका समाधान मिलकर किया। इससे परिजनों में परस्पर आत्मीयता और प्रेम भावना बढ़ी।

युग संदेश से युवावर्ग काफी प्रभावित था। सभी ने पूज्यवर की प्रगतिशील विचारधारा से जुड़कर समाज के चहुँमुखी विकास में सहयोग करने का संकल्प लिया। सभी में समय की माँग के अनुरूप विविध रचनात्मक कार्यक्रमों में भागीदारी का उत्साह बढ़ा।

यज्ञ के प्रति ग्रामीणों में बहुत श्रद्धा थी, प्रतिदिन यज्ञ की तीन पारी हुईं। पूर्णाहुति के क्रम में बड़ी संख्या में युवाओं ने शराब, बीड़ी आदि नशा छोड़ने के संकल्प लिये। संस्कार परम्परा के पुनर्जीवन की दृष्टि से भी यह समारोह अत्यंत उपलब्धिपूर्ण रहा। कार्यक्रम में 143 दीक्षा, 223 विद्यारंभ, 46 मुण्डन, 23 पुंसवन, 5 अन्नप्राशन एवं 7 जोड़ों के आदर्श विवाह संस्कार निःशुल्क सम्पन्न कराये गये।

- **जनजागरण :** विश्रामपुरी ब्लॉक के सभी 56 गाँवों में शक्ति कलश का भ्रमण।
- **सहयोग :** ग्रामीणों ने मिलकर अपने घरों में स्वयंसेवकों की आवास व्यवस्था बनायी।
- ग्रामवासियों ने ट्रैक्टर, पानी के टेंकर व अन्य वाहन निःशुल्क उपलब्ध कराये।
- वन विभाग ने 5 ट्रेक्टर लकड़ी निःशुल्क दी।
- **पारदर्शिता :** आयोजकों ने कार्यक्रम की पूर्णाहुति के ठीक पाँच मिनट बाद आय-व्यय का पूरा विवरण पटल लगा दिया था। पारदर्शिता की ऐसी तत्परता शायद ही पहले कभी देखी गयी हो।
- **ब्रह्मभोज** में साहित्य वितरण हुआ।
- **पौध वितरण :** 1500 से अधिक पौधे निःशुल्क बाँटे गये।

27 गाँवों का गहन मंथन

तुमगाँव, महासमुन्द (छत्ती.): तुमगाँव में 9 से 12 जनवरी के बीच 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं साहित्य स्थापना समारोह सम्पन्न हुआ। इसकी भव्य कलश यात्रा को नगर पंचायत अध्यक्ष सुश्री मीना शर्मा एवं उपाध्यक्ष सुश्री गोपी मोती साहू ने दीप प्रज्वलन कर रवाना किया।

कार्यक्रम की सफलता के लिए निकटवर्ती 27 ग्रामों में दीपमहायज्ञ, मंत्रलेखन, दीवार लेखन, साहित्य स्थापना का क्रम चलाया गया था। अनेक लोगों ने दुर्व्यसन छोड़ने तथा एक अच्छाई ग्रहण करने के संकल्प लिये।

शानदार उपलब्धियाँ

27	समूह साधना एवं दीपमहायज्ञ
575	घरों में साहित्य स्थापना
690	घरों में देवस्थापना
395	स्थानों पर दीवार लेखन
2400	पौधारोपण
24	बाल संस्कारशालाएँ चल रही हैं

कार्यक्रम सम्पन्न कराने शांतिकुंज से डॉ. गोपीवल्लभ पाटीदार की टोली पहुँची थी। उन्होंने युवा क्रांति वर्ष के अंतर्गत युवाओं को संगठित करने एवं उन्हें विधेयात्मक चिंतन से जोड़ने के विविध सूत्र बताये। कार्यक्रम में श्रीमती भोजबाई साहू, सर्वश्री बाबू राम साहू, सुनील शर्मा, गिरधर यादव, शिव यादव आदि की सराहनीय भूमिका रही।

यज्ञीय आयोजन में भाग लेती बहिनें

नये क्षेत्र में छायी उत्साह की लहर

मुरबाड, ठाणे (महाराष्ट्र) : मुम्बई में कल्याण के निकटवर्ती गाँव मुरबाड़ के संतोषी माता मंदिर प्रागंण में 26 जनवरी को पावन प्रज्ञा पुराण कथा एवं 24 कुण्डीय गायत्री यज्ञ सम्पन्न हुआ। ध्वजारोहण के साथ यज्ञ आरंभ हुआ, करीब 1000 बहिनों ने मंगल कलश यात्रा में भाग लिया।

यह कार्यक्रम बिलकुल नये कार्यकर्त्ताओं द्वारा आयोजित किया गया, जिसके लिए वे 3 महीने से तैयारियाँ कर रहे थे। आयोजन की लोकप्रियता और अपार सफलता ने उनके उमंग-उल्लास को कई गुना बढ़ा दिया।

प्रज्ञा पुराण कथा के माध्यम से विचार क्रांति अभियान, परिवार निर्माण तथा नारी जागरण के सूत्रों की युगानुरूप व्याख्या की गई। अनेक युवाओं ने अपने-अपने घरों में सुसंस्कारिता के बीज बोने का संकल्प लिया। दीप महायज्ञ में सैकड़ों युवक-युवतियों ने बिना दहेज, दिखावे के विवाह करने का संकल्प लिया।

नया क्षेत्र था, उत्साह भरपूर था। संस्कारों के प्रति भी लोगों में जबरदस्त आकर्षण दिखाई दिया। 250 दीक्षा, 300 विद्यारंभ संस्कार सहित बड़ी संख्या में संस्कार हुए।

यज्ञ में स्थानीय सांसद श्री कपिल पाटील, विधायक श्री किशन कथोरे, नगर सेवक श्रीमती शीतल, लोकसेवी श्री हरीश व्यास सहित हजारों लोगों ने भाग लिया। मिशन की विचारधारा और रचनात्मक कार्यक्रमों से वे बहुत प्रभावित थे। इनके प्रचार-विस्तार में हरसंभव सहयोग का आश्वासन उन्होंने दिया। उन्हें शॉल व श्रीफल से सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम सम्पन्न कराने शांतिकुंज से सर्वश्री अशोक ढ़ोके, मायाचन्द भारद्वाज तथा मनीष जी की टोली पहुँची थी।

देवसंस्कृति विवि को मिला योगा एक्सिलेंस अवार्ड

योग के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य एवं विशिष्ट योगदान के लिए देवसंस्कृति विश्वविद्यालय को 'योगा एक्सिलेंस अवार्ड' प्राप्त हुआ है। यह सम्मान 6 फरवरी को परेड ग्राउण्ड देहरादून में हुए एक कार्यक्रम में केन्द्रीय आयुष मंत्री माननीय श्रीपद नाईक एवं उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री हरीश रावत ने प्रदान किया। उन्होंने देवसंस्कृति विश्वविद्यालय की उपलब्धियों की सराहना करते हुए इसे योग के क्षेत्र में एक दैदीप्यमान सितारा बताया।

ज्ञातव्य है कि देवसंस्कृति विश्वविद्यालय पिछले 13 वर्षों में राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक प्रतियोगिताएँ जीतकर एवं प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त करते हुए योग के क्षेत्र में एक विशेष पहचान बना चुका है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की कार्ययोजना के निर्धारण एवं विश्वव्यापी लोकप्रियता बढ़ाने में भी इस विश्वविद्यालय ने शानदार भूमिका निभाई है।

केन्द्रीय मंत्री एवं मुख्यमंत्री जी से सम्मान प्राप्त करने देसंविवि के कुलसचिव श्री संदीप कुमार एवं योग विभाग के अध्यक्ष डॉ. सुरेश वर्णवाल पहुँचे थे।

देसंविवि को पुरस्कार देते केन्द्रीय आयुष मंत्री एवं मुख्यमंत्री

विचार क्रांति अभियान को गति देने का उभरा संकल्प

लखनऊ (उत्तर प्रदेश) : गोमती नगर, लखनऊ में 21 से 25 दिसम्बर की तिथियों में 9 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ प्रज्ञापुराण कथा का आयोजन हुआ। इसमें वर्तमान समय की विभीषिकाओं से बचते हुए समाज में रचनात्मक कार्यक्रमों को गति देने पर बल दिया गया।

आँवलखेड़ा से पहुँची टोली के नायक श्री रामकेवल जी ने कहा कि पूज्य गुरुदेव ने पावन प्रज्ञा पुराण में वर्तमान युग की विकट परिस्थितियों एवं विकृतियों सहित समस्त समस्याओं का समाधान दिया है। आवश्यकता उनके द्वारा बतायी जीवन शैली को अपनाने की है।

परिवार निर्माण के सूत्र विस्तार से बताये गये। बच्चों में सुविचार एवं संस्कार संवर्धन के लिए बलिवैश्व यज्ञ, सामूहिक प्रार्थना, संस्कार परम्परा के पुनर्जीवन जैसे उपाय करने की प्रेरणा दी गयी।

इस अवसर पर आयोजित गायत्री यज्ञ में लोगों ने विचार क्रांति अभियान को गति देने का संकल्प लिया। अपर जिला जज श्री राममिलन सिंह ने सपरिवार गायत्री मंत्र की दीक्षा ली। साथ ही पुंसवन, नामकरण, विद्यारंभ, दीक्षा संस्कार भी बड़ी संख्या में सम्पन्न हुए। कार्यक्रम में सर्वश्री एस.पी. अवस्थी, सुरेन्द्र सिंह, दिनेश यादव आदि की सक्रिय भागीदारी रही।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय प्रवेश सूचना : 2016-17

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में शैक्षिक वर्ष 2016-17 में स्नातक, स्नातकोत्तर, डिप्लोमा, प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए प्रवेश पत्र एवं विवरणिका (एडमिशन फार्म एवं प्रोस्पेक्टस) मिलना आरंभ हो गया है। यह देव संस्कृति विश्वविद्यालय से मँगाये जा सकते हैं अथवा देसंविवि की वेबसाइट से डाउनलोड किये जा सकते हैं। ऑनलाइन भी फार्म भरे जा सकते हैं।

पाठ्यक्रमों का विस्तृत विवरण, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के संबंध में विस्तृत जानकारी, प्रवेश प्रक्रिया की महत्त्वपूर्ण तिथियाँ, विविध जानकारियाँ प्राप्त करने तथा प्रवेश पत्र डाउनलोड करने के लिए संपर्क करें : www.dsvv.ac.in

दूरभाष : (01334)261367, 261485 एक्सः 5405, 5436
मोबाइल : 92583 69724, 9258369877

नोट : विस्तृत प्रवेश सूचना हेतु प्रज्ञा अभियान के 16 फरवरी 2016 के पृष्ठ 4 का अवलोकन करें।

योग पाठ्यक्रम बनाने में देसंविवि की विशिष्ट भूमिका

केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आगामी जुलाई 2016 से केन्द्रीय विद्यालयीन स्तर पर योग पाठ्यक्रम प्रारंभ किया जाना प्रस्तावित है। इसके लिए पाठ्यक्रम तैयार करने हेतु देशभर के 8 संस्थानों को लेकर एक समिति बनाई गयी है। योग को अंतर्राष्ट्रीय पटल पर प्रतिष्ठित करने में पिछले कई वर्षों से देसंविवि द्वारा निरंतर किये जा रहे कार्यों को देखते हुए इस समिति में देसविवि का भी चयन किया गया।

वसंत पर्व पर प्रकाशित साहित्य

आद. डॉ. साहब व आद. जीजी पुस्तकों का विमोचन करते हुए

मिशन का मोबाइल एप 'ऋषि चिंतन'

हिन्दी पुस्तकें :
- कर्मकाण्ड प्रदीप (भावार्थ सहित)
- आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी भाग-1
- आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी भाग-2

बांगला पुस्तकें :
- गरहस्थो जीबन एक जोगसाधोना
- ईश्वरर बिराट रुप
- बिबेकर कोस्ति पथोर
- जीबन ओ मृत्यु
- धनबान होबर गोपन रहस्या
- घर एक तपोवन, परिवार एक प्रयोगशाला
- दुरगति और सद्गति का कारण हम स्वयं
- आत्मो बिकासर चारती पादकचेप
- मानब जीबोनर गोरिमा
- श्री गातात्रीर दैनिक उपासनर सहज पद्धोति
- निश्चित फलदायी गायोत्री साधोना
- निज के जनून
- निज के पोरिबोरतित कोरुन
- निजर अनतरर ब्राह्मण और साधु के जागरीतो कोरुन

पंजाबी पुस्तक :
- स्त्रियाँ दा गायत्री अधिकार

युग वसंत ने जन-जन में किया नवचेतना संचार

युवा क्रांति वर्ष में हो तन वासंती, मन वासंती, जीवन का हर क्षण हो वासंती

वसंत सरसता, उमंग, उल्लास का नाम है, लेकिन यह युग वसंत है, कुछ विशेष है। आज से युवा क्रांति वर्ष का विधिवत शुभारंभ हो रहा है, जिसका संदेश है कि हम सबको युवा होना होगा। युवा वह जो वायु की तरह गतिशील है, उमंगों से भरा है, जिसमें आलस्य का स्पर्श नहीं, आराम की सोच नहीं। सकारात्मकता, सृजनात्मकता से भरा यौवन ही युग परिवर्तन का अभीष्ट लक्ष्य पूरा कर सकता है।

इस वर्ष युगतीर्थ शांतिकुंज में मनाया गया तीन दिवसीय वसंत पर्व आदरणीय डॉ. साहब के उक्त कथन को चरितार्थ कर रहा था। यह बात उन्होंने 12 फरवरी को सत्संग भवन में आयोजित मुख्य समारोह में कही। आदरणीया जीजी ने वसंत को अनेक रूपों में परिभाषित किया। पूर्व संध्या पर शांतिकुंज के वरिष्ठ वक्ताओं ने गुरुदेव के जीवन प्रसंगों के मार्मिक दृष्टांतों के साथ युग सृजेताओं को उनके दायित्वों का बोध कराया।

आदरणीय डॉ. साहब एवं जीजी सत्संग भवन में गुरुदेव के आध्यात्मिक जन्म दिवस पर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित करते हुए

वसंत पर्व पर परम्परागत कार्यक्रम आयोजित हुए। देवात्मा हिमालय प्रांगण में आदरणीया जीजी एवं आदरणीय डॉ. साहब ने ध्वजारोहण किया। विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने दर्शकों में सक्रियता का नव उल्लास जगाया। पर्व संदेश से पूर्व आदरणीया जीजी, डॉ. साहब ने परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी, माँ गायत्री, माँ सरस्वती, वीणा, मयूर आदि का भावभरा पूजन किया। युग गायकों के ओजस्वी गीत श्रोताओं में नवप्राणों का संचार करने वाले थे, सायंकालीन दीपयज्ञ बहिनों द्वारा सम्पन्न कराया गया।

ध्वजारोहण के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम

दीपयज्ञ के समय कैण्डिल मार्च

युवा क्रांति वर्ष की प्रमुख योजनाएँ

- 4 वीडियो रथ पूरे देश का भ्रमण करेंगे।
- 'यूथ एक्स्पो', युवा शिविर आयोजित होंगे।
- विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, विद्यालयों में युवा मण्डल एवं दिया शाखाओं का गठन होगा।
- युग प्रवक्ता प्रशिक्षण के विशेष शिविर होंगे।
- आदर्श युवाओं की जीवनियाँ लोगों तक पहुँचायेंगे।
- आदर्श ग्राम संकुलों का निर्माण कर उनके माध्यम से सप्त आन्दोलनों को गति देंगे।

पर्व और पूर्व संध्या पर युवा क्रांति वर्ष की सक्रियता के लिए दिया गया मार्गदर्शन

हम सबको युवा होना पड़ेगा

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

वसंत व्यक्ति को हर पल युवा बनाये रखता है। इसके अनेक रूप हैं। यह वसंत मीरा में अनुराग, विवेकानन्द में वैराग्य, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई में वीरता और भगतसिंह में बलिदान की हूक के रूप में उभरता है। वसंत जब जीवन में आता है तो आत्मशक्ति जगाकर समाज के उत्कर्ष के लिए कठोर से कठोर श्रम करने की उमंग जगाते हुए आता है।

परम पूज्य गुरुदेव का शिष्य होने की, इस मिशन का कार्यकर्त्ता होने की एक ही शर्त है कि हम सबको युवा होना पड़ेगा। युवा बन जाओगे तो शरीर भले ही थक जाये पर मन कभी नहीं थकेगा, वह कार्य की प्रगति में बाधाओं को आड़े नहीं आने देगा। युवा क्रांति वर्ष में हमें स्वयं युवा होना है और अन्य युवाओं को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करना है।

दृष्टिकोण का परिष्कार ही वसंत का आगमन है। हमें समय की चुनौतियों का समाधान तलाशना है। लक्ष्मीबाई, ज्ञानेश्वर, शंकराचार्य,, विवेकानंद आदि युवाओं से प्रेरणा लेकर हमें अपना यौवन सार्थक करने का संकल्प लेना है, गुरुदेव के सच्चे शिष्य बनकर उनके युग निर्माणी संकल्पों को पूरा करना है।

वसंत एक प्रवाह है जो हर पल साथ रहता है

आदरणीया शैलदीदी

परम पूज्य गुरुदेव कहते थे, ''मेरी निगाह में वसंत गुरु आदेश और अनुशासन ही रहा। मैं गुरुदेव के अनुशासन का हर पल, जीवन भर पालन करता रहा।'' गुरुदेव ने इसी गुरुभक्ति से वाणी की सिद्धि, सरस्वती सिद्धि, लक्ष्मी सिद्धियाँ प्राप्त की थीं।

वसंत पशुता को छोड़कर देवत्व की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है। यह जब उभरता है तो जीवन का कायाकल्प कर देता है। वासंती उमंगों में अपार शक्ति होती है। यह जब प्रह्लाद के जीवन में उतरता है तो अनाचार के विरुद्ध भगवान को भी अवतरित होने के लिए बाध्य कर देता है। भगीरथ के जीवन में उतरता है, तो उनकी तप साधना गंगा को धरती पर आने के लिए सहमत कर लेती है।

वसंत एक प्रवाह है, जो कभी रुकता नहीं। वह न उम्र देखता है, न अवस्था, वह तो सतत चलता रहता है, चलता रहता है। तुलसीदास 89 वर्ष की उम्र में रामचरित मानस लिखना आरंभ कर देते हैं। दामोदर सातवलेकर रिटायरमेण्ट के बाद संस्कृत सीखना आरंभ करते हैं और वेदों का भाष्य करते हैं। नवयुग के श्रीराम मानव में देवत्व जगाने के लिए सारा जीवन लगा देते हैं।

उपदेशक नहीं, मार्गदर्शक बनें

आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी

उपदेश देने वालों की आज कमी नहीं है, लेकिन आज की पीढ़ी उपदेश से प्रभावित नहीं होती, वह मार्गदर्शन चाहती है। उनका अनुसरण करना चाहती है जो स्वयं आदर्शों की राह पर आगे चलकर दिखायें।

हम उपदेशक नहीं, मार्गदर्शक बनें। गुरुदेव कहा करते थे कि हमारे यहाँ किसी को बूढ़ा होने की छूट नहीं है। हमारा जीवन कुछ कर दिखाने के जोश और उमंगों से भरा होना चाहिए।

हमारे अंदर भावना तो बहुत है, लेकिन वह कामना की पूर्ति में लग जाती है। गुरुदेव की बात को अपनी कामनाओं से जोड़ने लगते हैं और मूल प्रयोजन से भटक जाते हैं। अपनी भावना और कामनाओं का गुरुदेव की इच्छाओं में विसर्जन होने लगे तो गुरुसत्ता के अनुदानों का वही वासंती स्पर्श हमारे जीवन में भी दिखाई देने लगेगा, जो परम पूज्य गुरुदेव ने अपने गुरुदेव से प्राप्त किया था।

एक अंश के अवतार बनो

श्री कालीचरण शर्मा जी

पूज्य गुरुदेव ने हम सबको एक अंश का अवतार बनने का अवसर दिया है। तुम पर गायत्री माता की कृपा हो चुकी, अब तुम अपने आप पर कृपा कर लो। वे कहते थे कि तुम हंस बनने की साधना करो, गायत्री माता तुम्हारे भीतर साकार होती नजर आयेगी।

इसके लिए हमें आत्मपरिष्कार और लोकमंगल की साधना करनी होगी। युग निर्माण सत्संकल्प के एक-एक सूत्र का एक-एक माह चिंतन और अनुसरण करने का अभ्यास करना होगा।

नारी जागरण अभियान को गति देनी होगी

श्रीमती यशोदा शर्मा जी : नारी जागरण की जो प्रक्रिया परम वंदनीया माताजी ने आरंभ की थी, उसे आज द्रुतगति से आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। दुनिया की लगभग आधी आबादी बहिनों की है। उनके प्रति समाज की दृष्टि बदलनी होगी, बाल विवाह, दहेज, अंधविश्वास जैसी कुरीतियाँ दूर होंगी, तभी समाज का सही रूप में विकास संभव है।

साहस करो, शक्ति अनुदान पाओ

प्रो. प्रमोद भटनागर जी : युवावस्था शक्ति और उमंग से भरपूर होती है। इस अवस्था को जो अनुशासन में बाँध लेते हैं, उनका व्यक्तित्व निखरता हुआ चला जाता है। आज समाज युवाओं को पुकार रहा है कि वे आगे आयें और समाज की बागडोर सँभालें।

परम पूज्य गुरुदेव कहते थे कि आध्यात्मिक जीवन जीना कठिन नहीं, कठिन है वासना, तृष्णा से भरा जीवन। साहस करो, गुरुदेव के अनुदान-वरदानों से जीवन धन्य हो जायेगा।

तीन दिवसीय वसंतोत्सव की विविध गतिविधियाँ

अंतर्विद्यालयीन प्रतियोगिताएँ

युवावस्था की दहलीज पर खड़े विद्यार्थियों को विधेयात्मक चिंतन की ओर आकर्षित करने के उद्देश्य से 10 व 11 फरवरी को अंतर्महाविद्यालयीन निबंध, भाषण एवं कविता पाठ प्रतियोगिताएँ हुईं। वरीयता प्राप्त विद्यार्थियों को को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न एवं जीवनोपयोगी साहित्य भेंटकर सम्मानित किया गया। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रकोष्ठ के निर्देशन में हुई इन प्रतियोगिताओं में हरिद्वार व देहरादून जिले के कई कॉलेज, इंटर कॉलेज के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

विजेताओं को पुरस्कृत करते श्री शचीन्द्र भटनागर

सांस्कृतिक कार्यक्रम

सांस्कृतिक संध्या में गायत्री विद्यापीठ व देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने लघुनाटिकाओं के माध्यम से समाजोत्थान के कार्यों में सहयोग करने की अपील की। नौनिहालों द्वारा प्रस्तुत संगीत ने दर्शकों को भावविभोर कर दिया।

वसंत पर्व के दिन धर्म ध्वजारोहण के अवसर पर गायत्री विद्यापीठ, देसंविवि एवं शिविरार्थी-कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों से वासंती उल्लास की अभिव्यक्ति की।

शोभायात्रा

गुरुदेव के बोध दिवस के उपलक्ष्य में 11 फरवरी को भव्य शोभायात्रा निकाली गयी। व्यवस्थापक आदरणीय श्री गौरीशंकर शर्मा जी ने गुरुसत्ता के भावभरे पूजन के बाद हरी झंडी दिखाकर इसे रवाना किया। यात्रा शांतिकुंज से आरंभ होकर सप्तसरोवर क्षेत्र, हरिपुर कलाँ, देव संस्कृति विश्विविद्यालय होते हुए वापस शांतिकुंज लौटी। शोभायात्रा में पतित पावनी गंगा को निर्मल बनाये रखने एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण के नारे गूँजते रहे। पूज्य गुरुदेव, विवेकानंद, भगतसिंह, रानी लक्ष्मीबाई, महर्षि श्रीअरविन्द आदि महापुरुषों की युवावस्था की झाँकियों ने सभी को आकर्षित किया।

वसंत पर्व पर निकली शोभायात्रा

संस्कार

वसंत पर्व के विशिष्ट महत्त्व को ध्यान में रखते हुए हजारों लोगों ने ब्रह्ममुहूर्त में गुरुदीक्षा ली। आदरणीया शैलदीदी व आदरणीय डॉ. साहब ने दीक्षा दिलाने से पूर्व उसके अनुबंधों की जानकारी दी।

मुख्यमंत्री श्री हरीश रावत के पुत्र श्री आनंद रावत अपने बेटे चि. शिवाय का मुण्डन संस्कार कराने शांतिकुंज पधारे। उसके साथ बड़ी संख्या में लोगों ने यज्ञोपवीत एवं मुण्डन संस्कार कराये। विभिन्न प्रांतों से आये 20 युगलों का आदर्श विवाह ऋषिसत्ता के सूक्ष्म सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

-: प्रमुख संपर्क सूत्र :-
(समय प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक)
पूछताछ : 09258369725
email : pragyaabhiyan@awgp.in
डिस्पैच विभाग : 09258360665
email : dispatch@awgp.org
समाचार संपादन : news@awgp.in

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा सेंचुरी ऑफसेट प्रिंटर्स, ऋषिकेश में मुद्रित। संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय
पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411.
फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866

RNI-NO.38653/ 80
R.No.UA/DO/DDN/ 16 /2015-17
LICENCE TO POST
W.O. PREPAYMENT
vide No. WPP/ 04
RENEWED 2015- 2017